



I SSN 2229-547X VI DEHA

'बिदेह' १२२ म अंक १५ जनवरी २०१३ (वर्ष ६ मास ६१ अंक १२२)



ई अंकमे अछि:-

१. संगीदकीय संदमे

२. गद्य



२.१. गिरिशंकर सा 'ईपव-द्विवांगम

—



२.२. जगदीश प्रसाद माहपात्र-वसुधैव कुटुम्बक



२.३. बिन्दुशेखर ठाकुर- श्रेय-पत्र / संगीतक अरिसाध

२.४. प्रमोद मिश्र- नावीक चरित्र सभसँ बंगल कथासंग्रह 'जिन्दी'



२.५. जगदीश प्रसाद सा 'मय'- दुष्टी मिलि कथा- वागिसँ भवत देव सभसँ दिय रस

३. गद्य



३.१. जगदीशे चन्द्र ठाकुर खनिव- की जेठेव खा की लोवा लोव (खोये गीत)- (खोर्गो)



३.२. रिश्भुव ठाकुर लंगोवी- लम समाज लोव लोव पबदेशी लिय। जगुरे दुर्वल ए धवतीपर



३.३. जगदीशचन्द्र साहा- गजल १-४



३.४. शिर कमाव यादव- गजल



३.५. कञ्चन कान्तक दुर्गा करिता ब्रह्म समाज / माय एक छैकी कृष दख दे...



३.६.१. बाजुदेव माडक तीस लोष्ट करिता- लंगव मजदुर/ मसक दुखाव/ डालिक कप २.
जगदीशे ब्रह्मद माडक गाँछी गीत- खरिजे खगल/ उंगलव खेत/ धुव चव/ उन्टन/ जल
लिछव.....दुर्गा करिता- (तिवासंगीतिक खरवगव) सतरेख/गुकुव





३.१. राजेश कुमार सा-नेबरक खेव



३.४. रिशीता सा-देव आंग एकरी पबक खेव



४. पञ्च-पञ्च भवतीऽयम् तेषु कवितः पञ्चमेष्ट गीता तेषुसँ हिन्दी अश्वरादः खीवशीता सुन्दरी हिन्दीसँ मैथिली अश्वरादः रिशीत उषेव (दिल्लीक रैवकौबक घटनापव)- द्यार्जा २. फरवदश्रा



महेश्वरी- हरिशेकर श्रीरत्नर "नेवत- (हिन्दीसँ मैथिली अश्वराद- रिशीत उषेव)



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VI DEHA MAI TH I LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक (ब्रैल, तिबहुता आ देरणागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीटाँक लिंकपव उगल्ले अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link .

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ब्रैल, तिबहुता आ देरणागरी कगमे Vi deha e journal 's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अ-पत्रिकाक पहिन ३.० अंक

बिदेह अ-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक



[बिदेह आब.एस.एस.एच.डी एनीमेटेड बर्ले अणस सांठ/ बरौणसव नगाडु ।](#)



बरौणस "लेआडुं" पब "एड गाडजेट" मे "हरीड" सेलेक्ट कए "हरीड यु.आब.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठांगण केनसँ सेले बिदेह हरीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल बीडवमे पठरौ लेन <http://reader.google.com/> पब जा कऽ Add a Subscription बँटन दिक कक आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कक आ Add बँटन दरौड ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक गहिन पोडकास्ट सांठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि बहन छी, (cannot see/write Maitthili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सत पब जाड । संगहि बिदेहक सुँभ मैथिली भाषापाक/ बचना लेखक नर-प्रवास अंक पढ़ू ।

<http://devanaagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीकामे आँननांग देरनागरी ठांगण कक, रीकाम कापी कक आ रडि डाक्यूमेन्टमे पोस्ट कए रडि फाँगनेँ मेर कक । विशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maitthili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)



Go to the link below for download of old issues of VI DEHA Maitihli e magazine in .pdf format and Maitihli Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक प्रवाण अक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ हवाठे सभक हागत सभ (उंटाका, रीड सुथ साव आ दुराक्षित मत्र सहित) डाउनलोड करबोक हेतु नीटाक लिंक पब जाऊ ।

VI DEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



जातिबन्धुन पुरि मलाकरि रियागति । भावत आ लपानक माष्टिमे पसबन मिथिनाक धवती प्राटीन कानहिँ मलाण प्रक्य ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिनाक मलाण प्रक्य ओ महिना लोकनिक चित्र मिथिना बने मे देखु ।



शौबी-शिकबक पानरंशे कानक मुर्ति, एहिमे मिथिनाकबनेमे (१२०० रर्य पुरिक) अतिनेथ अकित अछि । मिथिनाक भावत आ लपानक माष्टिमे पसबन एहि तबहक अग्याग्य प्राटीन आ नर स्वागत, चित्र, अतिनेथ आ मुर्तिकनाक हेतु देखु मिथिनाक खोज

मिथिना, मैथिल आ मैथिलीसँ सञ्चलित सूचना, संपर्क, अद्ययण संगति बिदेहक सर्ट-गजल आ नूज सर्गिस आ मिथिना, मैथिल आ मैथिलीसँ सञ्चलित रेसमागष्ट सभक समग्र संकलनक लेल देखु बिदेह सूचना संपर्क अद्ययण

बिदेह ज्ञानरुतक डिस्कसन हवाकपब जाऊ ।

"मैथिल आब मिथिना" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरुत) पब जाऊ ।

1.संपादकीय

मैथिली-२०१२



मोर्रागनपव झखन हम मैथिलीमे रात करे छी तँ हमर सहकर्मी गौरी भोना कहे छथि- “रँडु मीठ
भाया अछि ।” गायत्री राँकठ कहे छथि- “अहाँक भाया मैथिली अछि आ हम सब अगन रँडीक नाम
मैथिली बाथे छी ।”

ए मिठासक भित्तवका खँस हम हुनका बुना ले गलै छियहि ।

२०१२ आ मैथिली भाया आ साहित्य

२०१२ रिभिन्न कावसँ मैथिली भाया आ साहित्यक गतिहासमे मोष बाखन जाएत । ए रर्यक शुरुमे
चलौबागज (नरनारपुव) मे रँचन ठाँवक जीक लल्लुमे जातिरादी वंगमटक रिकरु समाशासुव मैथिली
वंगमटक “गहिन रिदेह मैथिली षाँठ उमेर” २०१२ क प्रारम्भमे सम्पन्न भेल । रँचन ठाँवक रिगत २३.-
३० रर्यसँ मैथिली षाँठकक निदेशिक बहन छथि, दर्जन भवि षाँठक ओ लिखल छथि, जे अलकालक रँव
मटित आ प्रशंसित भेल अछि । ए रँकका षाँठ उमेरक थीम बहए “भवतक षाँठ शीमरक परिप्रेक्ष्यमे
मैथिली षाँठक आ वंगमट” । दु दिनक ए दिन-वातिक महोत्सरेमे जगदीश प्रसाद मल्लनक षाँठक
“रीवांगना”, रँचन ठाँवक षाँठक “रिशोसघात” आ गजेन्द्र ठाँवक षाँठक “उन्काङ्क” मटित भेल ।
एकव अनारौं षाँठकक सशुभ्रिकवण/ लोकगाथा आधारित एकाङ्कीक प्रदर्शन मेहो भेल । मैथिली करि सन्धान
भेल आ रिदेह सन्धान देन गेल जकव रिरवण निम्न प्रकासँ अछि ।

रिदेह समाशासुव साहित्य अकादेमी सन्धान

१. रिदेह समाशासुव साहित्य अकादेमी फेलो पुवकाव २०१०-११

२०१० श्री गोरिन्द्र ना (समग्र योगदान भेल)

२०११ श्री कमानन्द केशु (समग्र योगदान भेल)

२. रिदेह समाशासुव साहित्य अकादेमी पुवकाव २०११-१२

२०११ मुन पुवकाव- श्री जगदीश प्रसाद मल्लन (गामक जिनगी, नयूकथा संग्रह)

२०११ रौन साहित्य पुवकाव- जे.क. मायाबाथ ना (जकव षाँठकक चतुव होग, नयूकथा संग्रह)

२०११ हरा पुवकाव- आषाढ कमाव ना (कनह, षाँठक)

२०१२ अन्नराद पुवकाव- श्री बासलोलन ठाँवक- (गन्नासदीक मासी, रँगा- मासिक रँगापाध्याय, उंगनास,
रँगासँ मैथिली अन्नराद)

षाँठक, गीत, संगीत, नृत्य, मुर्तिकवा, शिल्प आ चित्रकवा क्षेत्रमे रिदेह सन्धान २०१२

अभिनय

नृत्य अभिनय

सुश्री शिल्पी कमावी, उत्र- ११, पिता श्री नररुण ना



श्री शोभा काशी महतो, उय- १३, पिता- श्री बामशरताव महतो,

हाथ- अतिथय

श्री शिवाका क्कारी, उय- १७, पिता- श्री रौद्रनाथ साह

श्री दुर्गादि ठाकुर, उय- २३, पिता- स. भवत ठाकुर

बृह

श्री सुखेखा क्कारी, उय- १७, पिता- श्री हरेबाग सादर

श्री अमित बंजन, उय- १५, पिता- नागेश्वर कामत

द्विकना

श्री पनकना मन्डन, उय- ३३, पिता- स. सुन्दर मन्डन,

श्री बमेश क्कारी भावती, उय- २३, पिता- श्री मोती मन्डन

संगीत (हावमोसियम)

श्री पबमान्दा ठाकुर, उय- ३०, पिता- श्री बखुशी ठाकुर

संगीत (ठोमक)

श्री सुनन बाँत, उय- ४३, पिता- स. टिष्टु बाँत

संगीत (बमनटोकी)

श्री रंहादुर बाग, उय-३.३., पिता- स. सबजुग बाग

शिपी-रनु कना

श्री जगदीश मल्लिक, उय-३.०, गाम- चलोबागज

मूर्ति-मृत्तिका कना

श्री सादुन्दन पंडित, उय-४३., पिता- अशेषी पंडित

काश्र-कना



श्री नमेली ऋथिया, पिता स. मुंगानान ऋथिया, उम्र- ३.३.

किसानी-आयेशिर्तव संकृति

श्री नहुमी दाम, उम्र- ३.०, पिता स. श्री हणी दाम

मिन्न सन्धान विदेह बाष्ट उमर २०१३ क अरसवपव देन जाएत:-

विदेह मैथिली पत्रिकाविता सन्धान-२०१२ श्री नरेन्द्र कुमार मा आ विदेह समाशासुव साहित्य अकादेमी हेतु प्रवक्तव्य २०१२ श्री राजनन्दन नान दाम (समग्र योगदान लेन)

2. विदेह भाषा सन्धान २०१२-१३ (लेखिक साहित्य अकादेमी प्रवक्तव्यक रूपमे प्रमिष्)

२०१२ रीत साहित्य प्रवक्तव्य - श्री जगदीश प्रसाद मन्डन केँ “तरेगण” रीत प्रेवक रिहति कथा संग्रह

२०१२ मुन प्रवक्तव्य - श्री राजदेव मन्डनकेँ “अर्धवा” (करिता संग्रह) लेन ।

2012 हरा प्रवक्तव्य- श्रीमती ज्योति सुनीत टोषवीक “अर्धिस” (करिता संग्रह)

2013 अक्षराद प्रवक्तव्य- श्री नरेश कुमार बिकन “याति” (मवाठी उपन्यास श्री रिष्णु सखायाम खान्दकव)

समाशासुव साहित्य अकादेमी प्रवक्तव्यक रूपमे प्रमिष् विदेह भाषा सन्धान साहित्य अकादेमीमे एक ज्योति रिशेयक हर्षी साहित्यिक (।) सन्धान सतक साहित्य अकादेमी मैथिली रिभागपव ४३. रर्येक कङ्काक रिक्छ प्रतियोग्याक रूपमे सोमाँ आएन । ४४ सानमे मैथिलि ज्ञान - ३७ रेव, कायसु-७ रेव, बाजपुत-२ रेव आ गधव सर्रा- ० रेव ए प्रवक्तव्यकेँ प्राप्ति क२ सकना । ज्ञानमे नीक लेखक जेना नरित, धुमकेत, धीरेन्द्र ए प्रवक्तव्यकेँ रचित बहना आ हरिमोहन मा केँ ए प्रवक्तव्य जिरेत ले देन गेन । प्रतियोग्यारदी लेखक सतसँ ए प्रवक्तव्यक निष्ठा भवन पडन अछि । सुभाय चन्द्र यादव, मेघन प्रसाद, रिष्णुदेव मन्डन, जगदीश प्रसाद मन्डन, बटिकेता आदि गधव ज्ञान लेखक जिनका मैथिली साहित्यमे अगाव आदर प्राप्ति छति, ज्ञानारदी साहित्य अकादेमीक कोषक शिकाव छथि । मिथिला राज्यक आन्दानगी लोक सत द्वावा गृहणीमे रिद्यापति परि (दिसम्बर २०१२) क अरसवपव जगदीश प्रसाद मन्डनकेँ ऋथ्य अतिथि रीणाओन जएरक रिरोध लेन, जकव घोव भर्सेना कएन गेन ।

रिद्यापति:

रिद्यापति मैथिलीक महाकरि छथि । पवस्रवाक अक्षराव ओ एकठा हाजाम ठाँव पविरावक छथि । ज्योतिवीर्य ठाँव हूकव रिर्वण “र्रा वनोकव” मे केल छथि आ श्रीधर दाम हूकव पदारलीक उल्लख उँदहका सहित “सदुक्ति कर्णामृत” मे केल छथि । श्रीधर दाम आ ज्योतिवीर्यक पवरती संकृत आ अरस्रक लेखक रिद्यापतिक उल्लख मैथिलि ज्ञानक पञ्जीमे लेन अछि । पवस्र किछ ज्ञानारदी सन्धान सत द्वावा ज्योतिवीर्यपरि रिद्यापति केँ ज्ञान रीणा देरक आ हूकका “गाग” पहिवा “पत्रागरीत संकाव” कवरीक प्रयास मैथिलीक यत्रागरीत संकाव कवरीक यत्रागरीक रूपमे देखन जा बहन अछि । साहित्यिक जगतमे सस्रुर्ण सान एंगव चर्चा होगत बहन आ ए साहिना सानक अस्तुमे लेन “गडिया हेरीछेठ सेन्धव भावतीय भाषा महामेर” मे सेहो उँठन । रिद्यापति परिक माध्याम मैथिलि ज्ञानक एकठा कष्टवरादी ग्रुप ज्योतिवीर्यक वंगचक साथ गिनि क२ मैथिली पव कङ्काक कोशिमिमे नागन बहन आ सामान्य लोक एँस दुव त२ बहन छथि ।



ठैलौव लिखेच अवधि:

मैथिलीक लेख पहिल ठैलौव लिखेच अवधि श्री जगदीश प्रसाद मंडनके "गामक जिनगी" नमूना संग्रह पत्र देल गेल। पत्रक एकव चर्चा दबडंगा सहित मिथिलाके लोक कला हिन्दी अखबार ले लेखक, आकाशवाणी दबडंगा सेहो पूर्ण चूप्पी माहल बहन आ अण ज्ञातिरादी चरित्र लोक सभक सोना बाखनक।

गुणव रिदेह बूझ:

रिदेह द्वारा गुणवक सहयोगसँ ४०० सँ श्रेणी मैथिली किताब गुणव बूझ पत्र १००% डाँडज आ डाँडनलोडक सुविधाक संग आँगनागण कएल गेल। अखेरी-मैथिली शिष्टकोषके कामल फिर्छेर मैथिल अनागक नागसेखक अस्तित्व विनीज कएल गेल।

साहित्य अकादेमीमे मैथिली सम्वयकक मलागण आ साहित्य अकादेमीक प्रबन्धकक बाजनीति:

साहित्य अकादेमीमे मैथिली सम्वयकक चयनक लेख ७ ठाँ ज्ञातिरादी संगठनके साहित्य अकादेमी माग्यत देल अछि। अ संगठन सभ मैथिलीक + म सम्वयकक मलागण केनक अछि। अ संयोग अछि री दुर्योग कि आग धरि एकव सभ सम्वयक मैथिली ब्रह्म भेल छथि, ए री सेहो अ फ्रम ज्ञाती बहन। यरा प्रबन्धक देरीमे सभ निश्चय खतम करैत लेखनी द्वारा नाम देल सभ पुस्तकक रिचाव करीसँ मला कइ देलनि आ एक माधिका पुस्तकके अ प्रबन्धक देलनि जेकर लेखक मूलतः हिन्दीमे लिखे छथि।

की मैथिली मात्र मैथिली ब्रह्मक भाषा छी ?

यदि साहित्य अकादेमी आ ज्ञातिरादी संस्था सभक री चर्चाके तँ उतव हँ बहिले। पत्रक समाधानक रिचावका आ समाधानक वगैर ए धारणाके प्रस्तुत कइ देलक। ए लेखक <https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi/> पत्र रिदेह मैथिली लिखि कथा, रिदेह मैथिली नमूना, रिदेह मैथिली पत्र, रिदेह मैथिली शिष्ट उमेर, रिदेह मैथिली शिष्ट उमेर, रिदेह मैथिली शिष्ट-निर्भर-समाधान आँगनागण उपनट्ट अछि। लिखित उपनक आ.पी.आ.ग. क जे उतव साहित्य अकादेमी देलक अछि ओ साहित्य जगतके लक्षित करैत अछि। सम्वयक आ ओकर एडरागजरी रौडिक सदस्य सभ जग तवहँ सभठाँ असांगमेष्ट स्वयं आ सब-संस्कारके दइ देलनि ओ ए संस्था सभक ब्रह्मरादी प्रवृत्तिके सोना अछि।

बाजदर मंडन, वामरिनाम साहू, उमेश पासराज, बाजदर प्रसाद मंडन साकदाव, जगदीश प्रसाद मंडन, उमेश मंडन, सुभाष चंद्र यादव, प्रेमशंकर सिंह, डा. उदय नारायण सिंह "बटिकेता", मेघन प्रसाद आदि लेखक निःस्वार्थ भासँ मैथिलीके प्राणराय दइ बहन छथि।

पागक बाजनीति:

ब्रह्मरादी पागक बाजनीतिके तखन रीष्ट पौध धरि नागन जखन खेतीमे महाकरि नागदाम जयन्तिक अरसवप पहिल री आयाजक लोकनि अ माननि जे अ ज्ञाति रीशेयक परिवार मिथिला मैथिलीक मंचक प्रयोग ले कएल जेकरा चाली आ ओ सह केननि। एकव समाधानक रिचावकाक रीष्ट पौध रिजयक रूपमे देखल जा बहन अछि।

प्राथमिक आ मध्य विद्यालयमे शिक्षक माध्यम मैथिली माध्यम:



सुश्रीम कर्षक निर्णयक रौदो अखला मिथिलामे शिक्षाक माध्याम मैथिली ले अछि । ए सङ्ग्रहमे एकठा रैठक निर्मितीमे भेल जगमे जगदीश प्रसाद मंडन, वाम रिनस साहू, बाबुदेव मंडन, रीलेन्द्र यादव आदिक उपस्थितिमे बाबुन कमाव जीक संयोजकत्वमे बिदेह रिटाव गोष्ठी सम्पन्न भेल आ हस्ताक्षर अभियान भेल । पबस्तु अ टिप्पणी सेहो एकठ कएन गेल जे मैथिली साहित्यक वर्तमान जातिरादी आ प्रतिस्पर्धादी सिनेरसकेँ रदनन जाए, आततायी जातिरादी जमीन्दारक ज़रणी कोण पुनाम माणसिकताक अस्तुश्रात सिनेरसमे बाखन गेल अछि ? कोसी पुनक उद्घाटनक अरसव पव अखिली नीतीमे कमावकेँ ए सङ्ग्रहमे स्थाव पत्र देन गेल ।

एकव अनारेँ बिदेह गोष्ठी (पविर्चा/ प्रकिर्णकन जेरौलेठवी प्रदर्शन) साहित्यक रिभिन्न आयामपव सम्पन्न भेल ।

लपान मे मैथिली:

डेणमार्क ऐन्सीक सहयोगसँ "बुँदियाव डोड । आ बाकस" (बमेशे बङ्गल निखित नाठक) कङ्ग दर्जन स्थापनव मर्तित भेल । रिद्यापति पुबकावक घोषणा भेल, दु नाथक पुबकाव बागभरोस कापडि शुभरकेँ भेठननि ।

बंगमठ आयोजनमे जनकपुवमे मैथिली नाठक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमा सम्पन्न भेल । सांस्कृतिक कार्यक्रामे गीत एरि नृत्य प्रस्तुत भेल ।

जानकी शरमा पव जनकपुवमे रम रिश्काठ भेल, मगडू मंडन सहित कङ्ग सांस्कृतिकर्मीक हवा भेलनि । पवमेशेव कापडि यागन भेला ।

सुसु महिला सुसु परिवार- सुसु समाज मुन नावाक संग यादुकोहा आ माटी मिठकहियामे मडक नाठक प्रदर्शन भेल । परिवार नियोजनपव आधारित जंगलमे मंगल नामक मैथिली भाषाक मडक नाठक पिमिआग लपानक सहयोगसँ प्रतिरिपु बंगमठ जनकपुव प्रदर्शित केनक ।

हरा नाठकना पविषद पवराहा देडवी द्वारा रिफेरी शिखरत २०३९ क पुर्न सन्ध्यामे अस्तुववाहिष्टिय मैथिली नाठक महोसरेर आयोजित भेल, उदघाटन गणतन्त्र लपानक पहिल बाह्यपति डा.बामरवण यादव केननि । महोसरेरमे लपान आ भावतक आठ नाठ समूह भाग केनक ।

बटिकेता क "एक डन बाजा"क मर्षन सबसुती पुजलामेरेर तथा रमभु पंछी मेला २०३+ क अरसव पव तिनायी मे भेल ।

हम जखन रैटा वही तँ गाममे "देशी कौशा" आ "काव कौशा" दुनु देखाग पडैत डन, "काव कौशा" चकमक आ कर्कश, "देशी कौशा" हलुक बंगक आ मधुव आराजरेना । लोक ककरो कर्कश रौनीकेँ सुनि रैजे डना- "केना काव कौशा मण रैजे छै ।" एन्व किडु रैथिसँ "देशी कौशा" रिबुष्टु भ२ गेल अछि, लोक सबकेँ एकव दूथ छै । चाक दिन काव कौशाक साय्याज्य राखु अछि ।



गजेंद्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

अगल मतर ggajendra@videha.com गव गठु ।

२. गद्य



२.१. शिरकमार सा 'दिव्य-द्विवागम'

—



२.२. जगदीश प्रसाद यादव-वधुका-कवक



२.३. रीशभ ठाकुर- शेष-पत्र / सपनाक अरिसा

२.४. प्रमल मिह- नावीक चरित्र सभसँ वगल कथासंग्रह 'जिन्दी'



२.५. जगदानन्द सा 'मल्ल'- दुष्टा बिरुधि कथा- वशिष्ठ भवन देव सभसँ दिय रँडु



শিবকাম সা 'প্ৰদ্যুম্ন'

দ্বিবাগম

আত্মসম্ভৱ জীৱক প্ৰবৃত্তি বখৰোনা লোকলৈ জখন পৰিস্থিতিৰশে অৱিবন স্নাত জীৱন শৈলীলৈ জীৱক অৱস্থান প্ৰয়োগে কৰএ পড়িত ঠিক ত জীৱনক শৈলীয়ে পৰিৱৰ্ত্তন অৱশ্যেভাৱী ভ২ জাগত ঠিক। গৰুহ দশো মৌখিক বসাম্ৰাদন কৰিত অগন সাহিত্য সাধনসম্ভ সমাজলৈ অৱশ্যেভাৱিত স্ৰস্ৰথ মলোৰ্জন দেৱীক প্ৰয়োগে কৰোঁৱনা আশুকথাকাবলৈ সোহো হোগত অছি।

হৰিমোহন বোঁৱ হাময় সন্ধ্যা ঠুথি। মৌখিক কথালৈ জগপ্ৰিয় বোঁৱক দূৰ্ঘট্টং হিনক প্ৰয়োগ অৱলম্বনীয় মানন জাগত অছি। গভীৰ চিন্তন হেতু অৱশ্যেভাৱিত কবৰীক জন সামাজিক অৰ্ণতদ্বন্দ্ব ও ৱিডমৰ্শালৈ অগন সবন শৈলীয়ে আৱোহন ক২ মৌখিক সাহিত্যলৈ মলোৰ্জন বসাম্ৰাদন প্ৰদান কেমনি। কিন্তু ৱ্যতিফ্ৰমক ফ্ৰময়ে হাময় সন্ধ্যা ঠুথি ৱিৱি গোনথি জে গভীৰ ৱিযয় হাময়ক উল্লেখিক তবমে পাণি-পাণি ভ২ গোন ভন। জকব প্ৰত্যক্ষ প্ৰমাণ হিনক চৰ্চিত ঔপন্যাস “কন্যাদাল” মানন গোন। সগৰো আৱোহনক বোঁৱি আঁৱি গোন ভননি। “বুঢ়ী দাগ”লৈ এহেন অৱস্থামে আঁৱি ক২ কিএক জোৰ্জি দেৱনি? ওগা ঠুথি কোণো অসহজ লৈ। হিথিনাক তথাকথিক ভনমাণ্ডয়ক পৰিৱাৰমে অখলো ৱহুত ঠাম “বুঢ়ী দাগ” কানি বহন ঠুথি। অগস্মাত ঠুথি কতো অগন সাস্বৰক পীড় স্ম ত কতো অগন লৈহবক দেন ৱাৰ্ণয় দুখময়ী অৱস্থিতাস্ম। জোঁ ৱিৱা ভ২ জেতীহ ত সমাজলৈ সৰীকাৰ্য ভ২ জখত কিএক ত ঔজ্জব সাড়ীয়ে ৱানা সৱন সমাজলৈ মান্য ঠিক। হুদা শিক্ষা ৱিহীন বুঢ়ী দাগলৈ জোৰ্জি পাশ্চাত্য জৱদগৰী সী.সী. হিথি কনা ভাগি সলৈত ঠুথি... ?

ৱেঁঠী দোসবক ৱাজ হোগঙ। ওকবা গস্কন লৈ পঠা ক২ ৱানকাকী কনা গনতী লৈ কেমথিল...।

হৰিমোহন জীক ঔ উদ্দেশ্যহীন ঔপন্যাসক আৱোহন হিনকা সমস্যাক তকোন সমাধান কবৰীক জন প্ৰেৰণা দেনক। আশুকথাকাব সমাজক দেন ঔপন্যাসলৈ ৱেঁঠিত লৈ ক২ সকন আ তক্ষণ একব সমাধান লিখৰীক জন উদ্ভত ভ২ গোন। শীৰ্যক দেন গোন “দ্বিবাগম”।

স্ৰাভাৱিক ঠিক ৱেঁঠী কোণো ঠোনকাক তাগ ত লৈ জে সড়ি গোন ৱাদ নিকালি ক২ দোসব তাগমে গাঁথন জাএ। তঁএ দ্বিবাগম দোসব কনা কবত। সী.সী. হিথি পাশ্চাত্য জোকব বুঢ়ী দাগলৈ মাঁডৰ্ণ ৱানা ৱনা ক২ দ্বিবাগম কবত। কোণো ৱ্যায়ধিশ্ম সাক্ষ্যক অভাৱমে লৈ চাইত ৱিৰ্দোয়লৈ সজা দৈত ঠিক ত ওকব শেঁৱদ-শেঁৱদক তাদাত্ম্য অৱস্থান নলৈত। তহিলা হৰিমোহন জীক দ্বিবাগমমে জগ-জগ সমাধানক ৱিদুক ঔত্কৰ্য ভেন ও ৱএহ প্ৰমাণ লৈ দ২ সকন জকব হৰিমোহন অধিকাৰী ঠুথি।

দ্বিবাগম অগন মৌখিক জৱদস্মতী মলোৰ্জন কবা ক২ হৰিমোহন লিখননি। এতেক ত ৱিশ্চিত অছি লৈসঙ্গিক প্ৰতিভাক ধনী ঔপন্যাসকাব কতো ঔ কট্টেলৈ প্ৰত্যক্ষ লৈ কএনি। সগ-সগ কোণো পাৱথী ঠুথি দূ:সাহস লৈ ক২ সলৈত অছি জে ঔ ঔপন্যাসক মান্যতাগব প্ৰম্ৰচিহ নগাওত। দ্বিবাগম সোহো কন্যাদাল জকাঁ অধ্যায়মে ৱিভক্ৰত অছি। প্ৰয়োগৱাদিতাক এহেন প্ৰমাণ মৌখিক সাহিত্যক



महाकार्य विधामे मन्त्रोपेक्षा तथा कार्य विधामे षट्केतके ज्ञोडा संभरतः आनर्थाय ले भेष्टे। मिस रिजनी रिश्वि-रिज्यानय अत्रात योरणा आ म्गणा छथि। सी.सी. मिश्री हूक हेल भ२ गेन छथि। सम्पूर्ण भाषामे आर्यक मूल भाषक श्लोकक तार्किक रिरेचन रिश्वि रिज्यानयक मंग-मंग ट्पाडीचवके मकमोकवि देनक। रिज्यान्ता “कानीदस” के म्गाम्भरमक भाषक रैणा देल छनीह तँ एंठाम ट्पाडीके अपन “रूट्टी दाग”मे सुयोग्य पाश्चात्य रानाक आशि ज्ञागर उपन्यासक यथार्थरानी क्रांति मानन ज्ञाए। जे मैथिली साहित्यक जेन तत्काल तँ रेड्गण अरम्य छन। मिस रिजनीक भाषामे जे आधुनिकताक जेरे उपन्यासकाव देथेरौक प्रयास केननि ओ पुकय प्रदान संकटित मानसिकताके भवन कथाकथित मिथिनाक सरन अर्थात सरनी समाज रिश्वेय क२ क२ ज्ञाणमे अथला मरीकार्य ले ओहि कान तँ सरनी अर्भर छन। अथला हमरा सरहक समाजमे मरीके सहचरी ले अम्भचरी मानन ज्ञागत अछि। अपन रेरोक हाम्मसँ हरिमोहन तत्कालीन सार्थ्यराण सरन मैथिलक अर्भतदमीपव तीक्ष्ण प्रभाव केननि, म्गदा हाम्म समागम मिश्रित बहरौक कावणे ओ समाज एकव मरके रूमि ले सकन। जेरे सभ्ठे गण्ण पुक्य दार्शनिक अर्दाजमे निखन ज्ञागतए तँ हरिमोहन ज्ञीक द्विवागमन ओहि अम्भेप भ२ ज्ञगतए जेना माग्यरानी जगदीश प्रसाद म्गडन ज्ञीक “मोनागन गाढक फुन” आ सुभाय चन्द्र यादव केव “म्वदेथिया” आ “रैलेत रिगड”क अछि। एकठी ज्ञाण साहित्यकाव द्वारा मन्त्ररानी प्रवृत्तिपव प्रभाव समाज द्वारा मान्य तँ भेन म्गदा मात्र हाम्म आ लोचकताक कावणे। जेरे हाम्म ले बहितए तँ चतुवागमन मिश्रिक “कना” जकाँ दृष्टियाक टाण मानन जेरौक संभारणाक रिश्वेय छन। “अकाण्डताण्डर”मे नानकाकी, आरने वानी, तारादाग आ दुनावामिक संवाद कटिपव नलोत अछि। एंठाम मिथिनाक पवम्भारानी दृष्टिकोणके उत्तम देथेरौक मूल कावण उपन्यासकाव नावी शिक्षा ओ चेतनाक मंग-मंग अर्भनीनक अर्भर मलेत छथि। एतेक तँ म्गयष्ट अछि जे रेरती क्मा मण शिक्षित भागक कावणे सकन ग्राम्य नावी पात्रा रूट्टी दागके आधुनिक रैलेरौक जेन तैयाव भ२ ज्ञगत छथि। पति पवमेथेव होगत अछि। ओकव गेड्डाके लेना ले पुर्ण कएन ज्ञाएत। ज्ञाण पविरावक मरी लेना दोसव रिखाह कवतीह ? एं प्रकावक कण्णा हरिमोहन कवरौक सहम ले क२ सकनाह। ओ म्गम पवम्भारानी समाजक अंग छथि। तँए पवम्भरा आ आधुनिकतामे समाजम्य स्थापित कवरौक गेड्डाशिकतिके नरन कर्णे सजा क२ रूट्टी दागके आधुनिक रैणा देननि। क्ग्यादणमे उद्देश्यरणी अर्ति यात्राक पम्भिति गहए भेन जे एकठी म्ग्य रानिकाले जर्भवदमती ततेक आधुनिक रैणा देन गेन जे रर्तमान पम्भितिये मेहो ग्राह ले भ२ सकैत अछि। ओग कानक जेन तँ सरनी अर्भपयकृत भेन हएत। जे रूट्टी दाग पहिन बाति सी.सी. मिश्रीक “नार्मिग” मरिदके नवमिह नगा क२ गावि रूमि गेनी ओ आरि डनमीक स्थापणव “क्राठेन”क गमना म्गपराक प्रेवणा अपन माएके दैत छथि- ज्ञ तँ सरनी अपट्टे मानन ज्ञाए। ओना “देशी म्गगी रिनायती रौन” पम्भितिये रमे संभर डैक म्गदा अर्भति ओहमे गामे बहि क२ रयस भेन म्गकथ रानाके शिक्षित रैणा क२ एहेन पविरर्तन कवरौक चेष्टी उपन्यासकावक अर्भदर्शिता मानन ज्ञाए।

अशिक्षित पुकय रा नावी जखन पम्भितिये पाश्चात्य संम्भति आरोहण करैत अछि तँ टाणमे पविरर्तन संभर डैक।

म्गदा एंठाम रूट्टी दागमे शिक्षाक क्मिक रिवास देखाओन गेन। पतिक आरिगण आ मिसहसँ रिद्वथ नावीके पविसास्रकण आधुनिक रैणए पडन एं प्रमंगमे तँ रूट्टी दागके आव गंभीर रैणा देरौक आरश्वेयकता छन। मात्र लोचरियाता आ म्ग्य साहित्य जेनपताक कावणे एतेक अर्भेकिक पविरर्तनके समाजक जेन कोला कर्णे दिनी निरदेशित ले मानन ज्ञा सकैछ। हरिमोहन मण पावथी बचकावक जेथनीक कमान मानन ज्ञाए जे मीनी ओ प्रवाहक मंग-मंग लोचकताक कावणे “द्विवागमन” लोचरिया भ२ गेन अर्भथा जेरे सामान्य साहित्यकावक ज्ञ प्रयास बहितए तँ कोला कर्णे साहित्यक जेन उपयकृत ले मानन ज्ञगतए। भाया मीनी ओ प्रवाहमे द्विवागमन अर्भतपुर्व प्रति थिक एंमे कोला म्गदेह ले। सबन



ग्राम्य समाजक शेरद “पी-डाली” न२ क२ पाश्चात्य ँपक्रम धरि कते ङ लै रूमना जागत अछि जे हविमोहन ँग समाजक अंग लै छथि जेग समाजक लेन सराद निखन गेन । अर्थात अरुम न२ क२ रिक्त धरि गामक “जबगाली” सग शेरद रोजैरानी महिनासँ न२ क२ मिस रिजनीक भाषा धरि एककगत देखा क२ ङ प्रमाहित तँ अरुम कएननि जे हूकामसँ पैघ रोम-रोममे पुनकित “मैथिली पुत्र” तबवि तँ अरुम लै लेन छन ।

ई बलागव अगम मंत्र ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदीश शरद म्द-वधुका-कवक

कवक

दिना-दिशांतव दिस दृष्टि ँठा रिश्रिमिद देखननि तँ सद्दमे जेव-जेवसँ ँठैत नहर्छि मज्जवि पडननि । नहर्छि क गति देखि रूमि पडननि जे कही बुचान तँ ल भ२ बहन अछि । एहेन बुचान पुर्णमे लेन छन आकि पहिन-पहिन भ२ बहन अछि । ह्दा ङ भाँज केना नागत ? ल एकेठा पोथी रँचन, सभ्ठारके दिराव था गेन आ ल एकेठा पुवान लोकके देखे छी जिनकासँ पुछि लेरनि । तखन ? आँधि रँल केले रिश्रिमिद रँद पिपणी तवसँ तकननि तँ जेता हगक म्थवा देखननि ।

मम्थवागव मज्जवि पँटिते कामिन प्रभातक सुर्गके अर्ध दैत देखननि । मम रिहूमि गेननि । अलले थापडि क तिसी जकाँ जगला-जगला ँछ नगननि । एह, ओह लौडि-लौडि कमान क२ गेन । अयोधिया बाजके ठगमा देनक । ह्दा नगले मम ठमकि गेननि । पैडना रीत गतिहास-पुवान लेन, अलले ओकरा धूल रँद ह्द तँ मोठका तौसक-सीवक रँगत आरि ओ हग बहन जे अलले पाँट कियो ँपरो आ पाँट कियो तवामे तडतड एत ! आरि तँ ठँठ । हराक दराग रिजनीक लीठव भ२ गेन । जिनगी असाण भ२ गेन, ह्दा आचावक कि रिचाव अछि से कतए हवा गेन अछि जे एना रँव-रँव सद्दमे नहर्छि ँठैत बँह । रिश्रिमिदक मम ह्द ठमकननि । ओह अलले कोन ह्दमे पड छी । घबराणी घब लेती, दाय जेती छुछे । कते दिस जिरै कवरि जे अलले माथमे मोठवी रँगहि



बखल बहरै । झुदा झारै आँधि तके छी तारै केना झुनन बहत । जेकब बकुडा ओठैमेष्टिक पीपनी करैत बहैत अछि । मल नचिटे बहनि आकि डेग उँठि पुरैबिया बसता पकडि लेनकनि ।

जाधवि भङ्गाएन बहनाह ताधवि तँ दिगँस नगनाहा जकाँ पुरै-पडिमाक रोध ले बहनि झुदा आगुक कष्टवि देखिटे रिश्रामिह टोकनाह । जहिया गाडी-सराडीक यात्री जीरन-मवणक रीट चलैत तहिया रिश्रामिहक सराडी मवन-जीअन रँठे पकडनक । आँधि उँठा देखनि तँ मन्थवाक घब सोममे पडनि । जीह हननि गेननि । कहूना छी तँ बाज-दवराबक छी किल । रँसले सोनाक पीठि देरै कवत । मत्त दि तँ मागेक रिश्राम ले गले छी झुदा आग तँ छेलेक रिश्राम गनरै । झुदा नगले जीहक पाणि धवतीगव खसिटे मल रँदननि । की मन्थवा जीरैत जीरैथे आकि झुगत जीरैथे । जहिया कोना गाममे जँ मत्त घेले भ२ जए तखन घेव के भेन । कियो ले, झुदा मन्थवा गाम ले टोकना गाम तँ कनाश्रुत ।

दवरेजजापव पहुँचिटे रिश्रामिहव आगन रँहारैत मन्थवाक नजवि पडन । पहिलके नजविमे अखड हाक खनीया जकाँ माष्टिक मनामी भेठनि । हाथमे रँठनि लेनहि आगनमँ मन्थवा रँसोह दोगन आरि डेठा यापव रँठनि पठकि दूनु हापे दूनु रँहि पकडि मन्थवा आगन न२ जा गोड नगनकनि । असीबराद दैत रिश्रामिह पडनथि-

“मन्थवा, अही तँ बाम-बाराक रँथेवा ठाठ केजौ, अखुनका कि हाव अछि ? ”

रिश्रामिहक प्रश्नव रिवाण ले द२ भूधिक मेरामे चुपचाप ननि गेन ।

आतिथ्य-मत्तकाव पछाति मन्थवा झूह थोवनक-

“रँरा मनावज, गतिहस-प्रवाण हमवा कनकिनी रँषा ठाठ केले अछि । असगवमे कहियो भेँठे हेरौक मय ले भेँठेन तँ अखन धरि अहाँ कान धरि ले पहुँचा सकन छेजौ, झुदा आग... । ”

रिच्छेमे रिश्रामिह पाकन आम जकाँ षणकि खसनाह-

“अ तँ हमर दूबभाग्य जे अहाँ मल कवामातीमँ तीन हागक पछाति भेँठे भेन । ”

रिश्रामिहक आमक बस पाणि मन्थवाएन मन्थवा रँजनि-

“दवरावमे हम लौडी छेजौ । लौडी-लौडीक मोजव कते हाग छे मे अहाँमँ छिपन अछि । तखन हमले दोख नगा किअ कनकिनी रँसोले अछि ? ”

मन्थवाक प्रश्न रिश्रामिहकेँ ठमका देनकनि । तकान रँतकेँ ठारैत रँजनाह-

“अखन हम हाव-टाव देखेथे चनन छी । अहाँक प्रवाण रँत अछि । ओ रँषा तहिक चिन्तनमँ ले हएत । ”

मन्थवा- “तखन ? ”



“यएह जे सात दिनक समय दिअ । आठम दिन आठ रोजे अगल आरि कहि देबै, ले जँ कोनो काजक उमरबामे पड़ि गेलौ तखन अहाँ सँ आठ रोजे जकब पहुँच जाएब ।”

ई बचनअब अगल मंत्र ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



बिन्दुशिव ठाकुर, धनुषा, लखन । हात-कताब ।

श्रेय-पत्र / सपनाक अरसन

श्रेय-पत्र

हमब प्राणप्रावी न्यता

मनबबिके माया आ म्लह मात्र अहाँके ।

हम अँठाम फुशन बहि अहाँक फुशनताक कामना कबैत छी । अहाँक रियोगमे रिना पाणिक माछ आ रिना लहू क२ माँस रँगन हम एत२ परिवारक भवण-सोषण लेन श्रेमजरीक ठैपी नगा दिन काष्टि बहन छी । काहिक ह्योणसँ साठ हमब मल रँड दूधित अछि । अहाँक उँपवाग छन जे हमबा रिसबि गेलौ, रँवारब ह्योण ले कबैत छी । अहाँके हमब खाने ले अछि । दूदा मल अँ ले छै । कियक तँ हम तँ रंस शीवीब छी जहिक२ आमे अहाँ छी । जौँ श्लोस लेरँरना ह्योणा हम छी तखन अँछीजन तँ अहाँ छी । आरि अही कछु जकबा रिना हम एक पन रँचि ले सकब, ओकवासँ अलग बहराक कम्पना कोना कबब ? दूदा तैयो पबिष्टिति लोककेँ दोसब क२ सामल रिरशि क२ दे छै । आन नग काम कबब, ओहो अँचल्लु गर्गामे, रँड पेघ रँत छै । घबमे रँसिया-फरँसिया किछ ले खग छेलौ । दूदा एत२ सुखन खरूस टिराएब नत भ२ गेल अछि । लखनमे बहत कान बिदेमे माल स्रज हएत से कम्पना कबैत छेलौ । ओतुका लोक सभ आनन्दसँ, खुशी साथ ज़ीरन रातीत कबैत हेताह, से अँम छन । पैसा जेना गाढसँ हिना क२ नाथ- दू नाथ पठरैत अछि, तहिना रँमागत छन । शीयद एखन अँछँ ओहे सोटैत हएब । दूदा देखु दिदेमेवी, मल अँ ले छै । स्रज कहन अँ जगह रियोगाभासमे तडपि-तडपि मरँरना स्रज छै । एत२ पैसाक महल्ल सँगे मल्लयाक खवीद-रिणी होग छै । दोसब दिन बातिमे अहाँ सँग रिताएन ओ पन सभ,म्लहक तीत-मीठ गप-सप रिठनीक खोता जकाँ हमबा मानस पठनमे आरििक२ हिन्द तोडि दैए । कखलो-कखलो बिदेमे छोडि क२ अही सँग ओगठाम माग-पात खा दिरस गमएराक गछा होग । दूदा रिगतक दुःख-दर्दसँ मल तबमि जाग । सठ, नीक खाना, नीक कपड़ । आ नीक गहना लेन कतेक तबमि गेल छेलौ । नीक खएब आ नीक नगाएब सपना भ२ गेल छन ।

एत२ आरि परिवार ठैरँरँ एकठै किनब मिनन अछि । दगिनु पूवा कबरोक एकठै सहबा अछि । हम एतरेमे खुशी छी । दूदा तैयो ह्योण कबरोक गर्गालि पैसा आ समय ले हएब, दोसबक रशेमे रँडद जकाँ जोताएब, घब- परिवारसँ दुर बहरँ चिन्ताक रियस थिक ।

एहन रियस पबिष्टितिमे हमब साथ देब, आमेरिश्लोस रँदु एब, अगनामे वैरँताक रँक मजगुत बाथरँ अहाँक कर्तर अछि । कावण अहाँक वैरँता आ आमेरिश्लोसे प्रवासमे हमबा होसना प्रदान कबत ।



अनुभवे समय-समयमे हेलन करैत बहरै मे राटाक संग एखन रिबाम । रौंकी देसब पत्रमे ।

अहाँक मूली
एकान्तु बाम
मकभूमि छैन, कताब

२

सगनाक अरसाव

एक दिन बामोचना आंगनमे सँ महेशे महेशे... किलोन करै छथि । तखन टोकिये पबसँ काकी कहे छथि, रौंकी एखने आँडे- काकीक मल रँड पिड़ एत आ मल थिल्ल बहए । बामोचना गामक रौंकी आ महेशक संगी छन । रूठिया बामोचनाकेँ रँजा कइ महेशकेँ वृतांत सुनरौंते छथि ।

महेशे जे तीस साल पहिले गेन छलाह कताब, अणस सगना पुवा कबरौक जेन । जयरौक रँव अरसु हर्षित- माएना घब रँगएरँ, पणैक जेन नीक कपड़ १, रँटा-रूटाकेँ नीक खुनमे पढ़ एरँ आ जुरौण रँहिनक मोदी कबरँ । हतपतमे पास्पार्ट रँलौनक । अणस कियो ले बहे रिदेमेमे । तेयो घबक पड़ सी मदलक सहयोगमे हुनकब मासामँ रीजा मञ्जैनक । पहिले कनिए पैसेमे भइ जएत कहिते मलपब चतसँ पहिले १ नाथ नगद जेरौक जिद कबरँ नागन । पैसे ले भेनाक कारणे दोरँव कइ कागज रँगरी जेनक । आरँ दुध-माछ दुनु रौतब भइ गेलै महेशकेँ । की कबत घबमे, मभ मदलक आँखि लोब पौठिते ओ गेनाह कताब । दूद हुनका मभकेँ ले टाली एना, काम नाखुवकेँ केहक दिन-वाति धुगमे तरूक उठएरँ आ देह धुनि रिडिडि कअप्रैकणमे काम कबरँ । ले खएरौक नीक बरसु, ले सुतरौक । कसणी मेहो मञ्जाग ।

घबक माद रँड मतरौक महेशकेँ । दूदा प्रतित्तक अछैन बहथिन महेशे । कतरौ दुख पीड़ १ होगतो काम ले छोडथिन । ओठास रँज रँडि कइ घब गिवरी बखरौक छिति आरि गेलै । एतइ पगाव जहिनक तहिना । दिन-दिन सोटि-सोटि कमजोब भइ गेन रँटावा महेशे । एक दिन काम करैत काम करेष्टे नागि गेन हुनका । माथी-संगीक सहयोगमे अस्पतान नइ जा रँटनथि । दूद हाथ रिना काम कइ भइ गेन । उंगवसँ कसणी तोवा गतिसँ करेष्टे नागन आ कसणीक समास मभ लोकास भेन कहैत माँस मेहो काष्टि जेनक । शरीर रिना कामकेँ भेनासँ उंगटाव कबरौक रँदना महेशकेँ घब पठा देनक । महेशेक आँखिसँ लोब रँव-रँव ठपकैत बहन ।

घब पँचनोक रौद ओ माएक छिति देखि रौक भइ गेनाह । जेना दूदसँ किछ अरौज ले निकनन । मास मेहो अखुिम माँस बोकल रँस महेशेक जेन । रौंकी-रूँटी रौंरूक मलसक प्रतीकामे । पणैक जेन मेहो किछ ले । हाथ खानी । रँड ग्लानि भेनथि महेशकेँ ।

किछ दिन रौद उंगवाग मभसँ महेशेक वैरताक रँङ्ग छुँष्टि गेलै । ओ रँङ्ग रँड मजगुत होग छै आ छुँष्टेनापब सरँनाथि होग छै । यएह भेन महेशेक माथ । अणस जुरौण रँहिनक बिराह दहेजक कारणा ले भइ सकन आ गामक लोकक ताना सुनि-सुनि ओ पागन भइ गेनाह ।

महेशे रँगि कइ मृष्टिक बका कबरँ उद्धुष्ट बखल हमर रँटी ए गरीरीक चपेष्टामे जिगगी नबक रँगा जेनक । आ हम मभ दब-दब भुँकि बहन छी । अते कहैत रूठियाक आँखिमे लोब भवन आ जोब-जोबसँ टिचिया उठन आ पिया-पुता जकाँ हूचकि-हूचकि कासइ नगनीह ।

बामोपब अणस मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाओ ।

शशुल मिह, मलेशुबरी



নারীক চরিত্র সত্তম বঁগব কথাসংগ্ৰহ 'জিন্দী'

জিন্দী কথাসংগ্ৰহক বাবেমে হম পহিনরঁব সামাজিক সঞ্জ্ঞান ফেসবুককে মাধ্যমসঁ জাণকাবী পএনহঁ । অঙ্গ্পাণ গৃহ জিন্মা মহোত্তবীক সদবন্ধকাম জজেশ্ববমে এহি শোখীক রিমোচণ ভেন খবঁব স্বনিকং হমবা মমমে স্বভাৱিক এহি শোখীকে বাবেমে ঞাওব জাণকাবী জেবঁক গড্ড়া ভেন । অঙ্গ্পাণ বাঁনাৱস্বামে মৌখিনী ভাষা সঁ পবিচিত নহি হেএবঁক কাবণসঁ হমবা অঙ্গ্পাণ মাত্ৰভাষা প্ৰতি ঞাওব রেস কটি ঞা ম্হন অছি । এহি ভাষাক বাবেমে জতেক ভং সকেয় ওতেক জাণকাবী ঞা এহি সং সাম্পিতা বঁত্ৰবঁক গড্ড়া হমবামে স্বভাৱিক অছি । সঁলৌহ সাহিবকে বিদ্যাৰ্থী ঞা প্ৰেমী হেএবঁক কাবণ সঁ হমবা এহি শোখীক প্ৰতি বিশেষ জিত্ৰাসা ড্ৰন ।

কাহ্নিতক মাসমে হম বিজয়াদশমীসঁ ড্ৰটি পাবনধবি জজেশ্ববমে বহনহঁ । হমব ভিব নাগেন্দ্রফমাব কৰ্ণ সঁ ভেটক ফমামে সঁযোগরশি এহি কথা সংগ্ৰহক বাবেমে হম হুণকা সঁ গ্ৰুডনহঁ । ভাওটীকাক দিস হুণকব গাম স্বগামে ট্ৰিগথু গ্ৰজাক ঞরসব পব গেন ড্ৰনহঁ ত ও হমবা জিন্দী ঁপহাবস্বকপ দেনাহ । শোখী ভেট্টেত মম খুস ভগেন । হমব পহিন মৌখিনী প্ৰতি পঠবঁক ঞস্বভৱ কেহণ হাযত মে মোটিকং হম ঞাওব প্ৰফুষ্ণিত ভং গেনহঁ ।

ঞগিনা দিস ভোবে ঁট্টেত হম জিন্দীকে হাতমে জেনহঁ । স্বক্ৰাতমে বহন ঁপ্পাণী সত্ত পঠিকং কিছু পূৰ্ণজাণকাবী জেনাক বাঁদ হম এহি শোখীকে পহিন কথা 'পূম্ন পূম্ননাওএকং বহন পঠনহঁ । কথা সমাপণ হোওতে হমব ভিতবকে পাঠক প্ৰসন্ন ভগেন । হমবা নাগন জে এহি প্ৰতি পঠবঁক জেন হম এতেক বিনয় কিয়া কএনহঁ ।

হমবা কথাকাব স্বজিত ফমাব ন্না ঞা এহি প্ৰতি প্ৰতি ওব বিশ্ৰীম বঁতন জখণ পহিনা কথা পঠনাক বাঁদ হমবা ঞাৱো কথা পঠবঁকজেন পম্মা ঁট্টেএবঁক গড্ড়া স্বতস্পূক্মত ভেন । একটী জেখককে বিজয়ক নক্ষণ গহে ট্ৰেক জে হুণকব প্ৰতিকে পাঠকগা স্বক স নংকং ঞস্বভবি পঠবঁক গড্ড়া হোয় ।

'পূম্ন পূম্ননাওএকং বহন' কে পীকীকে ঞপণ সঁলৌ ভেন ধোখাকে ঞরসবিমে পবিরটন কবিত দেখনহঁ ত ওকব বিন্নককে মম সনাম কয়নক । তহিনা 'নর ঞাপাবক' সাধণাক ঞসন্তুষ্টি ঞা নাবী ঞধিকাবক ঞপরাখাসঁ ঞঙ্গ্পাণ ঘবসঁসাব প্ৰতিকে জিন্দীবাৰী সঁ দুব ভেন দেখনহঁ ত নাগন ঞপল ঞডোসগডোসকে ককবো ট্ৰিণ ট্ৰেক । 'খালী ঘব ঞা ঞার্থক ঁডাণমে ফুখা পাব সত্তক মলোবৈজ্ঞানিকগক্ষক মুক্ষা দর্শণ ভেট্টন । তহিনা 'নান ডাগবী' মে এক ঁত্তম সস্তাঞ ঞিনবক স্নাদ ভেট্টন ত 'জিন্দীক গিন্মী ঞপল সামাজক দীশালীণ নরগ্ৰস্তাক সখার্থপবক ট্ৰিণ অছি । জিন্দীক ঞাওব কথামে মে হো ঁঠাএন গেন রিযস বহুত সখার্থপবক অছি । এহি সংগ্ৰহক কথা পঠনাক বাঁদ হমবা নাগন জে ও ত ঞপল ঞডোসগডোসক কাকা, কাকী, ভাগ, বহিন, দাগ, ঞা বাঁবঁক জীবনক ট্ৰিণ অছি । মমমে স্বভাৱিক কপসঁ একটী ঞবাজ ঞবিত ড্ৰন, 'এহণ ফনাণাকসঁগ মে হো ভেন ড্ৰন, ফনাণাকে স্বভাৱ ত ট্ৰিকে এহিনা ট্ৰেক ।

জিন্দীক বিশেষতাসত্তক বাঁত কএন জএ ত এহিকে প্ৰলেক কথামে নাবী ফুখা পাব (এচযতবঁনয়নস্বত) অছি । নাবীক চবিত্ৰক বিভিন্ন বঁগক এহিমে প্ৰস্তুতি কএনগেন অছি । পীকী ঞাদর্শ জীবনসাখীক ঁদাহবী ড্ৰযি ত সাধণা এক নাপবরাহ গৃহিণীকে । গিন্মী ঞঙ্গ্পাণ নক্ষসঁ ভট্টকন হরতীক প্ৰতিশিধি ড্ৰযি ত মমতা কঙ্গ্পণাক পঁফু নগাবিকং ঁডাণ কবনিনাব স্বপ্ৰপ্ৰেমী মহিনাক । গিন্মাক প্ৰণৌব্ৰতাক ট্ৰোগ ঞা নানটি চবিত্ৰ পাঠকক মম মিনোবি দৈত অছি ত কামলী মেডমক মমন্ন ককণাক ভাৱ জগবঁত অছি । এহিসঁ ও ঞস্বভৱ হোএত অছি জে ঞঙ্গ্পাণ সামাজমে বঁহুতবাস মহিনা ড্ৰযি জে ঞঙ্গ্পাণ ঘবসঁসাব সন্সাবিকং বহন ড্ৰযি ঞা তেহলো মহিনা ড্ৰযি জে কোলো লী কোলো কাবাসঁ ঞঙ্গ্পাণ জীবনক মানা সমেট্টিকং নহি বাখং সকন ড্ৰযি । কথাকাব ন্না এক খভচকবঁতশিত (বঁহুফুখী) সর্জক ড্ৰযি এহি বাঁতক প্ৰমাণ মে হো এহিসঁ ভেট্ট জাগত অছি ।

এক পাঠকক নজবসঁ দেখি ত জিন্দী কথা সংগ্ৰহ পঠনাক বাঁদ হমবা এক বোমাণ্ডকাবী সাহিবিক যাত্ৰাক



स्वाद लेखन जाहिमे अप्पन मिथिलाभजनक घबघबके कहानी रहूत कृशेनतापूरिक कथाकाव ना प्रस्तुत कयल छथि । हुनकर आगामी प्रतिक प्रतिष्ठा करैत हुनका जिदीक जेन रंधाग दैत छी, संश्लेष हुनकर आगामी बचनो सभकजेल शुभकामना दैत छी ।

ए बचनोपव अप्पन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

३. पद्य



३.१. जगदीश चंद्र ठाकुर अग्रिम- की लेखन आ की लेवा लेव (आमे गीत)- (आगामी)



३.२. रिश्भ ठाकुर लषावी- हमर समाज लीव लेव/ पबदेशी गिया/ जगुर दूरुत ए धबतीपव



३.३. जगदानन्द ना मल्ल- गजन १-४



३.४. शिर रमाव यादव- गजन



३.३. मूली कमतक दुगौ करिता सुछ समाख / माय एक छैकी कुष दथ दे...



३.३.१. बाखदेर माचक तीण छोट करिता-लंगर मखदुव/ मखक दुखाव/ छोटक कप /
खगदीमे प्रसाद माचक पाँछौ गीत-अरिते अगल/ उगखव खेत/ धुव चक/ उगल/ खल
बिछाव....दुष्टी करिता- (बिवांमज्ञातिक अरुसवगव) सतखै/शुकुतव



३.१. बाजेमे कमार मा-गेबरक लेव



३.४. बिनीता मा-देखु आंअ एकरी पवक खेव



खगदीमे छन्द ठाकुर अरिब

की छैव आ की लेव लेव (खोमे गीत) - (खोगौ)

बोले उठि सवा कले डी



परिजन, प्रियजन, गुरुजनके
आसन-प्राणायामक आदति
गुरु करैए तन-मनके
साहितक आनन्द हमर
दिनचर्यामे अछि समा गेल,
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे
की भेठेन आ की हेवा गेल ।

के ज्ञानय कहि बही ले बही
मोक्षक सभ रात कही ले कही
यात्री, हरिमोक्षन एखनहुं
खानी नहि छथि मिथिलाक मही
से मोटि सुग सन अछि करेज
आ देखि लेन अछि जूड़ । गेल,
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे
की भेठेन आ की हेवा गेल ।

सौंसे दुनियाजे एक सुर्ग
सौंसे दुनियाजे एक टाग
नाथ तलेगन केव रंग
सौंसे दुनियाजे आसमाग
ओ कनाकाव, ओ रैत्रागिक
सभ रैना कत२ छथि ब्रका गेल,



हम मोटि बहन छी ज़ीरनमे
की भेठन आ की हेवा गेन ।

भगवानक दर्शन होए
शुभ चिन्तनमे, शुभ कीर्तनमे
हरियार धवती, सुन्दर अकाम
शुभ दर्शनमे, शुभ अर्पणमे

देखै छी चाककात हमर
अडि हुन कते नर हुना गेन,
हम मोटि बहन छी ज़ीरनमे
की भेठन आ की हेवा गेन ।
हम छी प्रतक एहि अडिबुक
जे ज़ीरा केव आधाव देननि
मगनीमे भेठन रौद, हरा
आ देखौले समाव देननि
दूरिधामँ दूजिक मंत्र प्रेन
पथ महाजनक अडि सिखा गेन,
हम मोटि बहन छी ज़ीरनमे
की भेठन आ की हेवा गेन ।

हम छी उर्जा, ज़ीरन-उर्जा
हम उमेर छी ए तन-मन केव



शान्ति, प्रेम आनन्द मात्र

अच्छि नखर हमर एहि ज़ीरन केव

उंसोह भवन, उंसोस भवन

उकेर्यक पथ अच्छि देखा गेल,

हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे

की भेठन आ की हेवा गेल ।

(कहानीः)

ए बचोपब अपन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



बिन्दुमेव ठाकुर लषावी, धनुषा- लषान, हान- कताब

हमर समाज रौवा गेल/ पबदेशी लिया/ खन्नर दुर्वत ए धवतीपब

१

हमर समाज रौवा गेल

एथबुक सभसँ पौघ सरौन

अच्छि सगरो रौनकोव रौनकोव

गाँउमे रौनकोव, शहरमे रौनकोव

देशमे रौनकोव, बिदेशमे रौनकोव

बूँमु जे घोब कनसग ड़ा गेल

माले हमर समाज रौवा गेल । ।

अवाचाव, आतंक, महिना हिसा

निसुद्धै भ२ सभ केडु देखेत अच्छि



जगत तँ आगममे फूटले देखै
बुधैवाक त्रामसँ सबकारो डगमगा गेल
माले हमर समाज रौवा गेल । ।

सुबकाकर्मी पथञ्जु भ२ जूआ थेलै
शास्त्रिसैना तिनतारोधमे दाक पेलै
अशिक्षिक भूमबिमे धवती थोमा गेल
माले हमर समाज रौवा गेल । ।

कतौ हंसरूकसँ रौकौब
ककरो आगममे रौकौब
कखलो मिथुजसँ रौकौब
तँ कतौ शैवमे रौकौब
एहन अपबाध सरब्र डा गेल
माले हमर समाज रौवा गेल । ।

सहनशीलताक प्रतिमूर्ति नारी
मर्यादाक पवाकाशा होग छै
माया-प्रेमसँ जगत फुनारै
स्वप्न दर्शनक द्रष्टा होग छै
रूदा दुर्भाग्य दासक उदय भेल
सहणी माया रंग कंसक आगम भेल
द्रीपदीक टीवहका, सीताक कपहका
निन्दनीय घटना आग हब दोहवा गेल
माले हमर समाज रौवा गेल । ।

की कहू देखौ घोब अलैतिक रौत
जगठाम देखू रौकौब रौकौब
रौंठीक रौकौब, दीदीक रौकौब
मौसीक रौकौब, पिडुंसीक रौकौब
रुंमु जे घोब कनहाग डा गेल
माले हमर समाज रौवा गेल । ।

२

पबदेशी पिया

कोणा रिसबलौं रूहो हमर
भेलौं अहाँ कोणा रिवान
जग-जगक ब्रत-रंगसँ
पनतबिमे भ२ गेलौं आन ।

देख सपनामे छाती फूटैए
रिपनामे देख क२ दिन धडकैए
लोकक पिया घर आरौं छुपि
हमर आँधिँ लोव खसै ।



जगसँ हम भेलौ अलगनी
रँचपन छिनन सान्धव सौली
सौली उमबमे भेलौ पबदेसी
बिग्न पियाक जरीन रिठौली ।

केशि फक्कीरामे तेन गमकौआ
न२ जागत दुलौ पान-माथान
ठैकनक रीठ रौठ फूमौसा
अहाँ गामक बूठरौ हजाम ।

नीक ले नागए रिग अहाँके
लौठरौ कहिया अपन गाम
अमगव आरुण दाँत कठैए
रिग अहाँके ठाम-ठाम ।

३

जगसँ दुर्लभ अ धवतीपव

जगसँ दुर्लभ अ धवतीपव ।

माष्ट-पानि अछि जकव महान । ।

सदियोसँ पबिचर्चा सौल ।

अछि आरुणमाज रिपमान । ।

पुर्ज जिनकव षणा फेब्रमे ।

कमेल, त्रानी, गुरान छै । ।

गतिहासक हव गन्नापव ।

एकसँ एक नीक षाम छै । ।

एथनक मैथिल पत्रक छै भ२ ।

कर्म-कर्मकारी भ२ बहन । ।

आधुनिकताक दुःखित हरसँ ।

धावशीली मिथिलाकेँ क२ बहन । ।



एहम रिषम परिस्थितिमे ।

अपन कर्तव्यक लोध करै । ।

छिडिअन, तनन, भठकन जनलै ।

न२ समोअक ओव चनरै । ।

अ प्रणीत कर्मयोगी सभमे ।

अछि हमर चवण रँदना । ।

सम्पूर्ण स्रष्टा एरम् समाजमे ।

ए नररँयक शुभकामना । ।

ए बचोअपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पव पठाउ ।



जगदानन्द ना 'मनु'

ग्राम पोस्ट- हरिप्रव डीहठेन, मधुबनी

गद्य - १

भूतलनहूँ किअ एना मित रँना लिअ

छोडि सगरो रँहलालै छित नगा लिअ

रचन लै देरै हम लै किछ मोन एकव

आउं छनि मगमे हमरो अप्पना लिअ



काँष्ठ पसवत रीछुरै कहू एतेक कोणा
थुनकेँ नय कऽ योषक समय लछा निअ

जूमि रूमू आण जगमे सगलामँ कखला
रूमि अप्पान कनी छु ठावसँ सछा निअ

कग सुखव अहाँकेँ जा ओहिगव रँदवा
जोरै कोणा कलेजामे 'मय' रँसा निअ

(रँहले - असम, मात्रा एम - २१२२-१२२२-२१२२)

गछन-२

जीरण कथन तक छैक ले रूमनक कियो
कखला कलेजक गप्प ले जगनक कियो

भेष्टन तँ जीरणमे सुखक संगी रँहूत
देथेत दुखमे आँधि ले तकनक कियो

दुखकेँ अपन रँसी रूमै किछु जोक सभ
भेलै जँ दोसबकेँ तँ ले सुननक कियो



सदिखन बहन भाँतीत सब काजे अपन
आनक लोब घुँगवो कऽ ले रिछनक कियो

जीरण तँ अछि जीरोत मय्य' सब एतए
मगवो कऽ जे जीरोत ले रँनक कियो

(रँहने- बज्ज, २२५२ तीस-तीस लेब सब पाँतिमे)

गज्ज-३

जखन खगता सभसँ रँसी तखन ओ झूठ मोडि जेननि
जानि आहत छोरि हमरा सुखसँ नाता जोडि जेननि

देखि चकमक बग सभतरि ओहिमे रँहि ओ तँ गेली
जानि खखडी ओ हमर हँसिते कलेजा कोडि जेननि

रँसद केल हम मलोवथ अप्पन सदिखन चुप बहनहुँ
पाथ रँवथे आरि देखे लेब सपना तोडि जेननि

दुखसँ अप्पन अधिक दोसबकेँ सुखक चिन्ता कएल
आथि जे फुँटे दुनु तँ एक अप्पन छोडि जेननि

चनक सप्तत संग जेनहुँ जीरणक जतबाक पथपव



मेघ दुखलेँ देखते ओ संग मयलेँ छोटि जेवनि

(रहले - बगन, मात्राफा- २१२२ चाबि-चाबि लेब मभ पातिमे)

गजब -४

किए तीव नजकिसेँ अहाँकेँ चलेए
हँसी ग्राँ तँ घाएन हमरा करेए

मधुव रोजि खन-खन गएबक गजनिगाँ
हमर मोन बहि बहि कए डोनरेए

डनकए हरामे अहाँकेँ खूजन नष्ट
कतेको तँ दाँतेसँ आँधुव कष्टेए

समरि जे जए जखन आँचव अहाँकेँ

जिना भवि कलेजाक धडकन कलेए

अहीकेँ तँ झूह देखि जौरोत मय अडि

रिना संग ले साँस मिमियो चलेए

(रहले - झूतकाघिरेँ, मात्राफा -१२२-१२२-१२२-१२२)

ए बचोपब अपन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



शिर क्षमाब यादर

गजन

कत२ ब्रुकनही गे दिनतोडिया
कत२ भमनही गे मनतोडिया

तोही तँ हमर ममतीत गे
कत२ हननही गे मंगतोडिया

टाष मण तौँ हमर मजुनी गे
कत२ रिजनही गे लैणतोडिया

तौँ तँ हमर भगजोगिणी गे
कत२ पड़नही गे पगतोडिया

"शिक्षा" हेबाण तोड़ । जेन गे
कत२ भमनही गे मनतोडिया

(आर्मीय अणटिहाब जीक गाँति "कहाँ ब्रुकनही गे दिनतोडिया गे मनतोडिया" के देखि क२ तुबतमे
कहन गेन ।)

शिक्षा "मैथिल"

ई बचोपब अण मंत्र ggajendra@videha.com पब पठाई ।



रुही कामतक दुगो कविता ब्रुह समाज / माय एक छुँकी वृष दख दे...



ब्रह्म समाज

जोड़ि जाग जी एगो देह हम ।

हम निम्नांग भइ गेलौ

झुदा हमर दरद मदि जिलैत बहत,

हम चुगचाप जा बहन जी

झुदा हमर छि अहाँके

हविदम सकमोवैत बहत ।

दोष हमर ले,

अहाँके माणसिकताक छन

बूबांग हमबामे ले

अहाँके संकावम छन ।

रैजूबाण हम ले

अहाँके रैना कइ गेलौ

जा बहन जी,

हम थामोनि भइ कइ

अगल अराज बूँद केले

जा बहन जी ।

अगव अछि अहाँमे

जिंदा कनियो माणरता

तँ रैचाँद दोसर 'दाहिनी'क बाज,

यएह हमर गच्छा अछि

निम्नांग हूँ अगल समाज,



कक ले समर्पित हमारगव
हुन आ मोमरौती गाडी
देरै हमार सहि श्रेष्ठाजनि
तँ कक संकल्प रँगाएरै अहाँ
भाबिकेँ ज़ीं जेन एगो सुड समाज ।

२

माय एक छुँकी नून दख दे...

आंग हम जन्मिअ
रौंठी आ रौंठामे
कि भेद होग छै,
गर्भमे रौंठी
किअ गले छै ।
भाबिक दूःख
भाबिये जले छै,
तँए तँ हव माए
रौंठी जन्मारेसँ
डले छै ।
जग रौंठीकेँ माए
ज्जीरन दग छै,
रएह रौंठीकेँ
समाजक अवाटाव
मारै जेन मजबूब करै छै ।



लैश्वरिक भ२ क२

मलेसँ तँ नीक

माए गळ्ळत क२ तँ

मोत द२ दे

अ थकय सत्तामेक सगाज जीई

माए जगमिाते तँ हगवा

एक छूँकि नून द२ दे ।

ई बचनगव अगम मंतर ggaj_endra@videha.com गव गळ्ळ ।



१. बाज्देर मण्डवक तीण लोष्ट करिता-लंगवा मज्जदुव/ मणक दुखाव/ जालेक कग २.
जगदीने प्रसाद मण्डवक पाँछे गीत-अरिाते अगहन/ उगज्जव खेत/ धुव चका/ उगष्टन/ जल
मिाव.....दुष्टी करिता- (तिवासंगतिाक अरुसवगव) सतरेँथगुकुतव



१



बाज्देर मण्डवक तीण लोष्ट करिता- लंगवा मज्जदुव/ मणक दुखाव/ जालेक कग

१



संगवा मजदूर

किएक फरकाले छी यो दवरौण

हम ले छी कियो आष

ले कक एषा पवेशीण

ले छी भिखांगा, चाबे, रेंगमान

रैबख भवि पहिले हमरो बहे अही मस शीष

हमरी रेलीले बही अ मतमहना मकाष

कतेक नगा क२ नगष

काज केल बही भ२ क२ मगष

अगष दूथ किड कहन ले जाग

डुपवसँ खसन बही दूनु भाँग

ठाँग कष्टा क२ हमर रैचन जाष

महोदवारकेँ उँरि जेन प्राँष

ले छी दूथित केलौं ि नवमान

एहेष काजमे होगते छे रैनिदान

हमर तँ कर्तव्य अछि काजसँ नडरै

किड भ२ जेते काज तेयो कवरै

देखरौक नीनसा छन एकरैब

आँथि जूवा जाएत बहरै कलक देब ।

“भांगि जे अँठामसँ ले रैकनेन

अ जगह अछि रिशियष्ट लोकक जेन



मानिक एतौ तँ देख जेरँही थोन

उबण्तेमे चनि जेरँही जेन । ”

आँखि नली डै केहेन फुव

जेना देहमे क२ देते डुव

छेँहि घुमि गोन लंगवा मज्जदुव

अछि टुंग्पे आराज निकले दुव-दुव ।

२

मसक दुखाव

अन्हाव घबमे रौसन लोग

क२ बहन अछि जेना कोला

ले देखि बहन एक दोसबाक मूथ

कतए मँ भेँत दवशेनक सुथ

ओला बहन सब ठामहि-ठाम

रिषु मकसद जिगगी रोकाम

अन्हाव करै अन्हावमँ रौत

अन्हावमँ नगँले बहू सरँहक गात

अन्हावकाशी हथोर्छि या मारीत हाथ

ले जानि के कबते केकवागव आघात

शोकामे डुमन सब काते-कात



डव नाटि बहन अछि मापे-माथ

कतरौ कबरौ डूछडे जाग

अन्हाव घबमे माँपे-माँप

थोनाए पडत ि खडकी-दूआव

अन्तव मलक मभ केरौड

अन्हाव भ२ जाएत ताव-ताव

पहुँचत प्रकशि आव-पाव

एक दोसबसँ जाण-पहटाण

रैठत आगसी माण-सम्हाण ।

३

डाँहक कग

हम डी अभागन

जा बहन डी भागन

निम्मे डूमन या जागन

हवगन पाडौँ नागन

केहेन अ डाँह बिग्न पवराह

नलौत अछि अथाह

अमोथकित भ२ गेलौँ ललौत-भालौत

घुमि-घुमि पाडू तकेत-तकेत

झूहसँ निकलौत अछि आह



केलेन अछि जिदियाह
जशेन तक अछि अ काया
सँगे नगन बहत अ ड्याया
रैसी भागरेँ तँ थकित रूपत तन
उमवाएन बहत हवकण मन
अर्छा क२ गवथरेँ हम ओकव कण
छाहे छर्छा उँगव छाहे थमि कुण
कण हो ककण रा हो अणुण
ओकरे सँगे देखरेँ हम अणन सकण ।

२



अगदरेँ प्रसाद म्चवक पाँछी गीत-अरिजे अगलन/ उँगजव खेत/ धुव
छका/ उँगलन/ ज्ञान छिाव.....दुष्टी करिजा- (बिवाचनगतिक अरसवणव) सतरेँथा/गुकुतव

५

अरिजे अगलन.....



अरिंते अगहन ओस ओसा
धड़-धवती धड़ए नली छै ।
चव-चाँचव आँचव पकड़ा
उँजाहि मिनली चवए नली छै ।
उँजाहि मिनली..... ।

आँचव धन चाँचव पकड़ा
गवि गावा गारैए नली छै ।
अकन-सकन बभमि बाग
दिन-राति रीच गलै छै ।
दिन-राति..... ।

जेकव डलै तेकव गेलै
अगन कहि हककावि कहै छै ।
धनरैन मनरैन मिव चढ़ा
बाग-रिबाग अगणि कहै छै ।
बाग-रिबाग..... ।

२

उँगलव खेत.....



उंगजन खेत जज्जात जेणाली

झुड़ल, दोहन तेहन कहि छै ।

कोशो-काशी हिलिया-हिलिया

बाथी मिर सौति मज्जै छै ।

बाथी मिर..... ।

रौल-रौध रिसु बथा बाथी

मिर्जल मिबरौन कह्य गलौ छै ।

आनतु-पानतु हानतु रैनि

पवती-पवाँत कह्य गलौ छै ।

पवती-पवाँत..... ।

मवन धार चहि चहष्टि पेट

मुर्द-घाँट मिरज्ज गलौ छै ।

रैज्जवि रैज्ज पवतियो तलिया

मुड़-धन धाम रैगरेण गलौ छै ।

भाय यौ, झुड़..... ।

३

धुन चका.....

धुन चका चन्द्रामृत कहि

काका करीब अरुखागत एना

बज्ज सब मिर सहजि सज्जि



गोप गोस्रामी कहागत एना ।

गोप गोस्रामी..... ।

हव छग पन पनकि

जीखन-मवण चलेत एले

टीत चेता चकोव चितरण

मकव-सकव रिनहेत एना

मकव-सकव..... ।

जीता जी गुन-भत्ता

मवण कप सजरेत एना

चवण पकड़ा चन्द्र अमृत रनि

जन-खन मभ घुमेत एना

जन-खन..... ।

चवण-शेका कहि शेकागत

कप बोरौष्ट धड़ेत एना

जीरण अकृत अकृति जिणगी

नाम-वाम सिबजेत एना

नाम-वाम..... ।

४

उल्लेख.....



ऊँलठन ऊँलठन मदि-मदि रँनि

रौध रौध मिस चउँत एले ।

अदनि-रँदनि वीति-नीति

सुन-सुन्य सुनरौँत एले ।

गीत यौ, सुन..... ।

दम-रौँस, तीस तेरँव

जेरँव रँनि-रँनि मजेँत एले ।

नरँरौँ-असमी खसमी खसि

खड़-खड़ गत खसित एले ।

गीत यौ, खड़..... ।

पडिया पड पकडाँ पडखाँ

आगु-पाडु ठेलेत गेले ।

राम-दहिना रौँहि पकडाँ

पाँठ बोरि पँठकेत एले ।

गीत यौ, पाँठ..... ।

३.

जान रिचाव.....

जान रिचाव अरिँते आँगना

जानदाव रौँस कहरँए नली डै ।



कर्म-शेर्द बटि-बटि रसि

कग कर्म सजरेँ नली छै ।

भाय यौ, कग..... ।

भार कह छै अहार शेर्द

कर्म गराली दगत कह छै ।

कवता-धवता जे जल जाषए

साधि-साधि मंगल गरे छै ।

भाय यौ, साधि..... ।

कर्म-धर्म कि शेर्द-धर्म

आधि मिटोनी खल खलै छै ।

तिबछा-तिबछा तीस-तीसरुष्टिया

रिबीछ-तिबिछ रोगए नली छै ।

भाय यौ, रिबीछ..... ।

दुष्टी करिता-

१

(तिवासंग्रतिक अरुसवगव)

सतरेँ

सह केव शक्ति जलोछ भूमि बा



उँठि-मवि, मवि उँठि, उँठि कहे छै ।

रूँज-मिक्कूँज प्रकय पबीछा

अमत्-सत् स्वमत् रँले छै ।

गत्यादि, आदिमँ दान्नी-बानी

मतर्लेष थिस्रमा कहेत एनी

लेद-प्रवाण मिब-सजि मणि

दिम-बाति सुमरौत एनी

भवन-प्रवन पौथी-प्रवाण

मत-रौष जिमगी भवन-प्रवन छै ।

कखला जोगीक जोग रँमि

तीम मत राण बँष्टे छै ।

कान कचक चक सुचक

राण रँमि मारैत बहे छै ।

राण राणि बाबी-प्रकय संग

माड १ शक्ति मजुरैत बहे छै ।

मिथिला मर्म माथ तखन

मथि-मथि माथ मिनरै छै ।

दान मतंजा रौँष्टि-रिनहि

जिमगी मयन करैत कहे छै ।

चफ़ी-कचफ़ी राण रँमि रण

टानि ककड धड़ैत एलेए ।

जिमगी जूँथा पकडि -पकडि



पडुआ पाठ रिनेहैत एलेए ।

पाठि-पाठि पठिया-पठिया

पठिया धवती रिडुरैत एलेए ।

नरि गोमरि गमाव रुद्रु कहि

तव-उपवा वंग चठरैत एलेए ।

टिकण-टुनरुन टुनटुनागत देखि

लोन-रौन रतिखागत एलेए ।

मन-मानुख हुमना-पनिया

मन-मानर कहैत एलेए ।

रौनि मोडा पकडा पग

जंगन नाच देखैत एलेए ।

जुगर कप सजि-धजि-धजि

भौ-आँधि चठरैत एलेए ।

हुन कमान रौमोरौवा कहि

कमान दहन दहनागत एलेए ।

दोरैव-तेरैव दस-रौस कहि

सत् शुन्या भरैत एलेए ।

सैया-निगारै मंत्र वटि रनि

खसनी-खसनी रँगरैत एलेए ।

रंजित तन कहि-कहि

मानर-मन वटैत एलेए ।

खसनी-रौकवी कप देखि-देखि



मान्नु खुन पीरैत एलैए ।

लका दर्शन पुरि बाग

राग सद्गद्द पकडौं छै ।

सत-रौध पाखव पकडा - पकडा

सेतु रागह रँगरौं छै ।

२

शुक्ल

शुक्ल भाव भरोसँ पहिल

शुक्ल पाठ पठैत पठौं छी ।

सडा -सडा सविया-सविया

सिब साष्टि सज्जण मलौ छै ।

बुन-बुन बुझी पकडा - पकडा

धडा -धडा धावण करै छै ।

धडकि-धडकि धड-धडधड ।

गति गीत मीत गरौं छै ।

शिरगंगा पकडौंसँ पहिल

पाखव-साष्टि रँगण मलौ छै ।

परिहास बटि-रँसि कैलाशि

बाति शिर बचरण मलौ छै ।

एक-एक जोडा -जोडा पजेरौ



महन तज सजरैए नली छै ।

पकड़ा रौहि अफब जैह

रण-उपरण सजरैए नली छै ।

अफब-जैह गिनि रैमि

शक्ति शेरुद सजरैए नली छै ।

हित-सहित पकड़ा - पकड़ा

झूह साहित्य सिबजए नली छै ।

ई बजोपब अपन मंतर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



बाजेश्वर शर्माव मा

शेवारीक जेव

सुनरै छी एकठा शेवारीक कथा,
शेवारीक जेव ओ की की करैए
पहिल शेवारीकै रूमै छै ओ शैशेण,
शेवारीक वंगमे वलौए
शैशेण रूमते-रूमते,
ओ शेवारीक नत पकड़ेए
पहिल पिआरै छै संगी-साथी,
बादमे ओ अपन पिआरैए
पिआ रान्तु हम देखलौ,
ओ परिवारक सम्पति बूटैए
जौ परिवार ओकरा बोकै छथिण,
हूणका फण्टी-चबिबलीन कहैए
जहन परिवारक सम्पति बूटै जाग छनि,
परिवार हूणकव बुखे मबैए
तहन ओ करैए पौच-उधार,
अपन सगा-संरधीकै ठकैए
पौच तँ आपिस लै करैए,
हुंकर सगवा-साँपी करैए



तहण ओ करैए जीना-मगरी,
अंग तबहै ओ समाजोकेँ बूठैए
शिकागतपव जहण प्रमिस पकडेँ डै,
ओ जेहोमे गतत संगी रैठरैए
जहण जेहसँ राहव अरैए,
तहण बूठैवा-गिबोह रैणरैए
शिवारीकेँ चाली रैम शिवरै,
जहण की शिवरै शिवारी केँ पिरैए
शिवरै छी अग्यायक रीज,
अकवा रैठैसँ बोकैए
रैद कवाँ ओ शिवरैक ठैका,
ओ माणरकेँ हेराण रैलल य२
ऊँरु गजवात जकाँ हव बाज,
शिवरै रैठैपव पारैन्दी केल य२

ए बचोपव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।



बिनीता मा

देखु आंग एहरौ पवक खेन

देखु आंग एहरौ पवक खेन
भेय रैदलि लोक अपन भेन
देखु खेलेत छथि कतेक खेन
रैठरैत छथि अजानसँ मेन
भाणा तवहक डायारि
बुकरैत अपन कायारि
हँसना जे काँ एँ ज्ञानमे
भाणि हूणक छहि एँ कानमे
मतर्क भए आजूक पीठरैकेँ
रूमरैक चाली सब चालिकेँ
बाथेत डेग मन्हावि कए निश्चित
कन्याण हूणक तखनहिँ ठी अपेक्षित ।



ঐ বচনাগব ঞ্গণ মতব ggajendra@videha.com গব পঠাউ ।

বীনাগা গ্ৰতে

বঁচা ঞ্গকনি দ্ৰাবা স্ৰবীয ঞ্গক

১.প্রাত: কান ঞ্গকদ্রুত (সূর্যোদয়ক এক যঁঠা পহিল) সর্গপ্রথম ঞ্গণ দ্ৰু হাথ দেখরীক চাহী, ঞ্গা ঙ্গ ঞ্গক বঁজরীক চাহী ।

কবাগ্ৰে রসতে ঞ্গক্ষী: কবমন্ডা সবস্নতী ।

কবমুখে স্থিতো ঞ্গক্ষা প্রভাতে কবদর্শনম্ ॥

কবক ঞ্গাগাঁ ঞ্গক্ষী বঁসেত ড্ৰথি, কবক মধ্যমে সবস্নতী, কবক মুনমে ঞ্গক্ষা স্থিত ড্ৰথি । ভোবমে তাহি দ্ৰালে কবক দর্শন কবরীক থীক ।

২.সঁধ্যা কান দীপ জেসরীক কান-

দীপমুখে স্থিতো ঞ্গক্ষা দীপমন্ডা জ্ঞানর্দন: ।

দীপাগ্ৰে শিফ্বব: প্রাক্ত: সন্ধ্যাজ্যাতির্গমোংস্তুতে ॥

দীপক মুন ভাগমে ঞ্গক্ষা, দীপক মধ্যভাগমে জ্ঞানর্দন (রিপ্তু) ঞ্গাং দীপক ঞ্গ্র ভাগমে শিফ্বব স্থিত ড্ৰথি । হে সঁধ্যাজ্যাতি ! ঞ্গহাঁকৈ বমফাব ।

৩.স্বতরীক কান-

বাগা ফন্দ হনুমন্তু বৈশতেয বৃকোদবম্ ।

শযলে য: সাবেল্লিবঁ দ্ৰু: স্নগন্তশ্য বশ্ঠতি ॥

জে সত দিন স্বতরীসঁ পহিল বাগ, ফমাবস্নগামী, হনুমান্, গকড ঞ্গাং ভীমক সাবা কবিত ড্ৰথি, হুণকব দ্ৰু: স্নগন্ত শ্ঠ ভং জাগত ড্ৰহি ।

৪. বহেরীক সময়-

গঙ্গা চ যদ্দলে টের গৌদারবি সবস্নতি ।

বর্মাদে সিঙ্কু কারেবি জ্ঞেংসিগ্ সল্লিবি ফক ॥

হে গঁগা, যদ্দনা, গৌদারবি, সবস্নতী, বর্মাদা, সিঙ্কু ঞ্গাং কারেবি ধাব । এহি জনমে ঞ্গণ সাঙ্ঘিধা দিঞ্গ ।

৩.উত্তরী যসেদ্রুদশ্য হিমাঙ্কশ্চর দক্ষিণম্ ।



रर्यी तत् भावत नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सद्भद्रक उन्तवमे आ२ हिमानक दक्षिणमे भावत अछि आ२ ओतुका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

३. अहना द्रोपदी सीता तावा मन्दादरी तथा ।

पञ्चक ना सारेल्लिब महापातकशिकम् ॥

जे सभ दिन अहना, द्रोपदी, सीता, तावा आ२ मन्दादरी, एहि पाँच सङ्गी-स्त्रीक सबा कलैत छथि, हुनक सभ पाप नष्ट भ२ जागत छहि ।

१. अश्विथोमा रैजिर्यासो हनुमान् रितीयाः ।

पुपः पवश्रामाष्ट सन्तते चिबङ्गीरिनः ॥

अश्विथोमा, रैजि, राम, हनुमान्, रितीया, पुपाचार्य आ२ पवश्राम- ङा सात ठाँ चिबङ्गीरी कहलैत छथि ।

+ साते भरत सुधीता देरी शिखर रामिणी

उत्रेण तपसा अट्टा यया पशुपतिः पतिः ।

मिच्छिः सार्व सतामन्त्रु प्रसादान्त्रु धूर्जष्टैः

जानरीक्षणनेथेर यशुमि शिषिनः कना ॥

६. रौजो२ठ जगदामन्द न मे रौना सबन्तती ।

अशुर्णे पचमे रर्ये रर्यामि जग३त्रयम् ॥

१०. दुर्लभित मन्त्रशुनन यजुर्देद अध्याय २२, मन्त्र २२)

आ अँल्लिबन्त्रु प्रजापतिवन्त्रुषिः । निभोकता देरताः । सुवाङ्कृतिवन्त्रुदः । यङ्जः सुवः ॥

आ अँल्लिब अँल्लिबो अँल्लिबो जगतमा वाष्ट्रे वाङ्मन्त्रुः शुभे२गवरा२तिर्याधी महावयो जगतमा दोग्ध्री
प्रेषुर्णेठलड्वरानाशुः सन्धिः पुवञ्जिर्योरा जिञ्जु वपेष्टाः सन्धेयो हराशु यजमानशु रीवो जगतमा निकामे-
निकामे नः पुञ्ज्या रर्यतु फणरवा न२उयवयः पचन्त्रु योषोक्तयो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थाः मिहयः सन्त्रु पुर्णाः सन्त्रु मलावथाः । शिवुर्णा रूँछिनामो२न्त्रु मित्राणाद्भद्रयन्त्रु ।

ॐ दीर्घाशुर्भर । ॐ सौभाग्यरती भर ।

हे भगवान् । अपन दैमिमे सुयोग्य आ सररु विद्यार्थी उपेन्न होथि, आ शुभुकेँ नाशि कएनिहाव सैनिक
उपेन्न होथि । अपन दैमिक गाय खुरि दुध दय रौनी, रैवद भाव रहण कवएमे सक्कम होथि आ योड्डा
द्वरित कर्णे दोगय रौना होए । स्त्रीगण नगवक लेशुत्र कवरौमे सक्कम होथि आ हरक सतामे ओजपूर्ण
भाषण देरैयरेना आ लेशुत्र देरौमे सक्कम होथि । अपन दैमिमे जखन आरथक होय रर्या होए आ



पुष्पिक-रूपी सरिदा परिपक्व होगत बहए । एरि एमे सभ तबहै हमा सभक कगाण होए । शत्रुक
बुद्धिक भाषि होए आ मित्रक उदय होए ॥

मन्त्र्यके कोण रत्नक गडा कबरौक चाही तकव रनि एहि मन्त्रमे कएल गेल अछि ।

एहिमे राटकबुष्टागमान्ड काव अछि ।

अभय-

ब्रह्म - रिद्या आदि ग्राम परिपूर्ण ब्रह्म

बाह्ये - देशमे

ब्रह्मरत्नी-ब्रह्म रिद्याक तेजस हकत

आ ज्ञाता- उपेक्ष होए

बाज्यः - बाजा

शुभे रिषा उव रना

गयरा- राण चेरौमे सिष्ठा

अतिर्यापी-शत्रुके ताका दय रना

महाब्रह्म-पेघ बथ रना रीव

दोष्ठी-कामला(दुष पूर्ण कवए रानी)

प्रेमरौठमड्राणाशुः प्रेम-लौ रा राणी रौठमड्रा- पेघ रवद नाशुः -आशुः -बुबित

सन्धिः -घोड़ ।

प्रबुद्धि-योरा- प्रबुद्धि- रारहावके पाका कवए रानी योरा-द्वी

जिष्णु-शत्रुके जीतए रना

बपेष्ट्याः -बथ पव द्विव

सन्धेयो-उत्तम सन्धामे

हराशु-हरा जेहन

मज्जमानशु-बाजाक बाज्यमे



रीना-मित्रके पवाजित कवरना

निकामे-निकामे-निश्चयकृत कार्यमे

नः-हमर सभक

पर्जन्या-मेघ

रर्यतु-रर्या होए

फलरना-उत्तम फल रना

उषयः-उषयिः

पटुता-पाकए

योगेकामो-अनन्त नन्त करैक हेतु कएन गेन योगक बन्ना

नः'-हमरा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिभुक्त अन्नरद- हे अन्न, हमर राज्यमे अन्न नीक धार्मिक रिया रना, राज्य-रीव,तीर्दज, दुध दए रानी गय, दोगय रना जन्तु, उन्मी नारी होयि । पर्जन्य आरथकता पडना पब रर्या देयि, फल देय रना पाठ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/संवर्धित करी ।

8.VI DEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The Science of Words - GAJENDRA THAKUR translated by the author himself

8.1.3.On the dice-board of the millennium- GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)- SHEFALI KA VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya Verma

Send your comments to ggajendra@videha.com



बिदेह नूतन अंक भाषापाक बचनावेखन-

गहिनीकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-गहिनी- प्रोजेक्टके आगु रैठ डि, अपन सुमार आ योगदान ग-
मेन द्वारा ggaj_endra@videha.com पब पठाडु ।

**१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-ऐतानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मणक गेदी आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठक्य**

१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-ऐतानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मणक गेदी

१.१. लपावक मैथिली भाषा ऐतानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मणक उचाका आ लेखन गेदी

(भाषाशास्त्री डा. बाभारताव यादवक धाकाके पूर्ण कर्ण सभ न२ निर्धारित)

मैथिलीमे उचाका तथा लेखन

१. **पठमाक्षर आ अक्षराक**: पठमाक्षरवास्तुतः ७, ए३, ण, न एरी म अरैत अछि । संकृत भाषाक अक्षराक
निर्देशक अक्षरमे जाहि रक्षक अक्षर बहेत अछि ओही रक्षक पठमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अर्ध (क रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)

पथ (च रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)

खल (छ रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ण आएन अछि ।)

सखि (त रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे न आएन अछि ।)

खस (प रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे म आएन अछि ।)

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पठमाक्षरक रीदनामे अरिक्कणि जगहपव अक्षराक
प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पठ, खड, सधि, खड आदि । र्याकवणरिद पण्डित गोरिन्द नाक
कहर डनि जे करण, चरण आ छरणसँ पूर्ण अक्षराक निखन जाए तथा तरण आ परणसँ पूर्ण पठमाक्षर
निखन जाए । जेना- अक, चण, अडा, अण तथा कण । इद हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक
एहि रीतके नहि मालेत छथि । ओ लोकनि अण आ कणक जगहपव सेहो अत आ कण निखेत
देखन जागत छथि ।

नरीण पछति किछु स्विधाजनक अरथ डैक । किएक तँ एहिमे समान आ स्थानक रीत होगत डैक ।
इद कतोक रैव हतुलेखन रा इदनामे अक्षराक छोट सन रीन्दु स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत
सेहो देखन जागत अछि । अक्षराक प्रयोगमे उचाका-दोषक सम्भारणा सेहो ततरै देखन जागत
अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परण धरि पठमाक्षरक प्रयोग कवरि उचित अछि । ससँ न२ क२ त्र
धरि अक्षरक सभ अक्षराक प्रयोग कवरिमे कतहु कोना बिराद नहि देखन जागछ ।

२. **ठ आ ठ** : ठक उचाका “व ह”जकाँ होगत अछि । अतः जतः “व ह”क उचाका हो ओतः मत्र
ठ निखन जाए । आष ठाम खाली ठ निखन जएरीक छली । जेना-



ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि ।

ठ = गढ़ 1ग, रठर, गठर, मठर, रूठरी, साँठ, गाठ, वीठ, चाँठ, मीठी, पीठी आदि ।

उपह्रास शब्द, सभके देखनासँ अ स्पष्ट लोगत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरुमे ठ आ मया तथा अन्तमे ठ अरैत अछि । गह मियम ड आ डक सम्बन्ध सेहो नागु लोगत अछि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रँ कएन जागत अछि, हुदा ओकरा रँ कएने नहि लिखन जएरौक चाली । जेना- उच्चारण : रैगुनाथ, रिया, नर, देरता, रिष्, री, रन्दना आदि । एहि सभक स्थानपर फ्रान्सी: रैगुनाथ, रिया, नर, देरता, रिष्, री, रन्दना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओहन आदि ।

४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, हुदा ओकरा ज नहि लिखरौक चाली । उच्चारणमे यर, जदि, जहना, जुग, जारत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जएरौना शब्द, सभके फ्रान्सी: यर, यदि, यहना, यग, यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाली ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राचीन रतिनी- कएन, जए, हेत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रतिनी- कएन, जाय, होगत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शब्दक शुरुमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शब्द, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शब्दक आवृत्तमे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्बन्धमे प्राचीन पञ्चतक अनुभव कवरौ उपहास मानि एहि पञ्चकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता आ दृक्कताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसधारणक उच्चारण-मैथिली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएर आदि कतिपय शब्दकेँ केन, हेर आदि कएने कतहु-कतहु लिखन जएरौ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी स्वीकार प्रमाणीत करैत अछि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पञ्चवामे कोना रीतपर रँन दैत कान शब्दक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणहू, ओकवहू, तकोनहि, छेष्टहि, आणहू आदि । हुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एरँ हूक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणना, तकोने, छेष्ट, आणा आदि ।

१.य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उच्चारण थ लोगत अछि । जेना- यडव (थडव), योडनी (थोडनी), यडको (थडको), रुषेनी (रूथेनी), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।



+ ध्वनि-लोग : निम्नलिखित अक्षरसमूहमे शिर्षमे ध्वनि-लोग भऽ जागत अछि:

(क) फियाण्ययी प्रत्य अक्षरमे य रा ए वृत्त भऽ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक्षर उँटावण दीर्घ भऽ जागत अछि । ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न रा रिकारी (/ २) नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण रूप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतोक ।

अपूर्ण रूप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतोक ।

पठऽ गेनाह, कऽ जेन, उँठऽ पडतोक ।

(ख) पुरिकालिक प्राप्त आर्य (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्त भऽ जागछ, ह्रदा लोप-सूचक रिकारी बहि नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण रूप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण रूप : था गेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य एक उँटावण फियापद, मरुता, ओ विशेषण तीनुमे वृत्त भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण रूप : दोसवि मानिनि छलि गेलि ।

अपूर्ण रूप : दोसवि मानिन छलि गेल ।

(घ) वर्तमान प्रदन्तक अन्तिम त वृत्त भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण रूप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण रूप : पठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) फियापदक अक्षरसमूह एक, उँक, एँक तथा हीकमे वृत्त भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण रूप : छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरिठेक, होगक ।

अपूर्ण रूप : छियो, छिये, छली, छो, छै, अरिठे, होग ।

(च) फियापदीय प्रत्य ङ, ह् तथा हकारक लोप भऽ जागछ । जेना-

पूर्ण रूप : छहि, कहनिहि, कहनहूँ, गेनह, बहि ।

अपूर्ण रूप : छनि, कहनि, कहनौँ, गेनऽ, बग, बघिऽ, ले ।

६. ध्वनि स्थानान्तरण : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अक्षर जगहसँ हठि कऽ दोसवि ठाम छलि जागत अछि । खस कऽ जस्य ग आ उँक सङ्क्रममे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भऽ गेन शिर्षमे मया रा अन्तमे जँ दस्य ग रा उँ आरँए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शि (शिङ), पा (पाङ), दा (दाङ), मा (माङ), का (काङ), मा (माङ) आदि । ह्रदा तसेम शिर्ष, सतमे ग निश्चय नागु बहि होगत अछि । जेना- बघिके बगय आ स्वर्गके स्वर्गडस बहि कहन जा सकैत अछि ।



१०. हलन्त () क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त () क आरंभकता नहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अन्तमे अ उच्चारण नहि होगत अछि । ऋदा संस्कृत भाषामें जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हलन्त प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टकेँ मैथिली भाषा संस्कृति निश्चय अस्मभाव हलन्तरिलीन बाखन गेन अछि । ऋदा र्याकवण संस्कृति प्रयोजनक लेन अवारंभक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देन गेन अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनु शैलीक सवण आ समीक्षण पक्ष सभकेँ समेष्टि कए र्ण-रिग्यास कएन गेन अछि । स्थान आ समयमे र्णतक संस्कृति हलन्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवण होरंरना हिसारसँ र्ण-रिग्यास गिनाओन गेन अछि । र्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक लेन लेरं पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक गुण विशेषता सभ कृषि नहि होगक, तादृ दिस लेखक-संजन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक कहै छनि जे सवणतक अस्मकालमे एहन अरंभ किम्व ल आरं देरक चीनी जे भाषाक विशेषता छहिये पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग नए निर्धारित)

१.२. मैथिली अकार्य, ष्टना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिष्ट, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि र्णतमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः तहि र्णतमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एखन

ठाम

जकब, तकब

तनिकब

अछि

अग्रह

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (रैकल्पिक रूपेँ ग्राह)

ँड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकल्पिकतया अगणाओन जाय: भए गेन, भय गेन वा भए गेन । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जए बहन अछि । कब गेनाह, वा कबय गेनाह वा कबए गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'ष' लिखन जाय सकैत अछि यथा कहनि वा कहनिह ।

४. 'ँ' तथा 'ँ' ततय लिखन जाय जत स्पष्टतः 'अ' तथा 'अँ' सदृश उच्चारण गइ हो । यथा- देथैत, छलैक, लौंथा, छौक गवादि ।



३. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द, एहि कषे प्रयुक्त होयत: जेह, सेह, गएह, उएह, लेह तथा देह ।

७. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'अ' के ब्रह्म कवरि सामान्यतः अग्रह्य थिक । यथा- ग्राह्य देखि आरह, मानिनि णेनि (मन्त्रय यात्रमे) ।

१. स्वतंत्र अक्षर 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चरणा आदिमे 'ँ' यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कषे 'ए' रा 'य' लिखन जाय । यथा:- कयन रा कयन, अयनाह रा अयनाह, जाय रा जाय गवदि ।

५. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक कषे देन जाय । यथा- धीआ, अठेआ, रिआह, रा धीआ, अठेआ, रिआह ।

६. सांख्यिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथार्थतः 'अ' लिखन जाय रा सांख्यिक स्वर । यथा:- मैआग, कनिआग, किवतनिआग रा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कषे ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । मे मे अक्षरबाव सरिआ अछि थिक । 'क' क रैकल्पिक कषे 'केव' बाखन जा सकैत अछि ।

११. पुरिकानिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कय' अरय रैकल्पिक कषे नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि कय ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवदि लिखन जाय ।

१३. अर्ह 'अ' ओ अर्ह 'अ' क रौदना अक्षरबाव नहि लिखन जाय, किंतु भाषाक स्वरिधार्थ अर्ह 'अ' , 'अ', तथा 'अ' क रौदना अक्षरबाव लिखन जा सकैत अछि । यथा:- अर्ह, रा अर्ह, अक्षन रा अक्षन, कर्ष रा कर्ष ।

१४. हनंत छिन् लिखतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कयन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छिन् शब्दमे सँ क लिखन जाय, हँ क नहि, सँ अक्षर रिभक्तिक हेतु हवाक लिखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अक्षरबावकेँ चन्द्ररिन्दू द्वारा अक्षर कयन जाय । परंतु अक्षरबावकेँ स्वरिधार्थ हि समाज जर्जन मात्रापर अक्षरबावकेँ प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रौदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रौदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाय पामीसँ (।) सूचित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क लिखन जाय, रा हाँअक्षरसँ जोडि क , हँ क नहि ।

१९. लिख तथा दिख शब्दमे रिंकारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अक्षर देरणागवी कषे बाखन जाय ।

२१. किंतु ध्वनिक लेव नरीन छिन् रौदना जाय । जा अ नहि रौदना अछि तबत एहि दू ध्वनिक रौदना



पूरिबत अथा आया अथा आथ/ आउ/ अउ विखव जाय । आकि ए रा ओ सँ बउ कयव जाय ।

ह.।- लारिन्द सा ११/१३ लीकासु अरुव ११/१३ सुबेद सा सुम ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा सम्पदन पाठकेय

२.१. उँचाका निर्देशः (बोल्ड कयव कग ब्राह्म):-

दनु ण क उँचाकामे दाँतमे जीह सँठत- जेना रोजू नाग, दूदा ण क उँचाकामे जीह मुर्धामे सँठत (ले सँठैए तँ उँचाका दोय अछि)- जेना रोजू गणेशि । तानरा नेमे जीह ताकसँ, यमे मुर्धसिँ आ दनु ममे दाँतसँ सँठत । निगो, सत आ मोया रोजि कइ देखु । मैथिलीमे ष केँ ऐदिक संस्कृत जकाँ अ सेनो उँचवित कयन जागत अछि, जेना रया, दोय । य अलको स्रणणव ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञेग आ

गइसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचाका र, ने क उँचाका स आ य क उँचाका ज सेनो होगत अछि ।

उहिना दनु ग ऐनीकान मैथिलीमे पहिल रोजन जागत अछि काका देरनागवीमे आ मिथिलाक्षरमे दनु ग अक्षरक पहिल लिखला जागत आ रोजला जखरीक चाली । काका जे हिन्दीमे एकव दोयपूर्ण उँचाका होगत अछि (लिखन तँ पहिल जागत अछि दूदा रोजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दोयक काका हम सत ओकव उँचाका दोयपूर्ण ठगसँ कइ बहन छी ।

अछि- अ ग ड **अँड (उँचाका)**

छथि- छ ग थ **छैथ (उँचाका)**

गहूँछि- ग हूँ ग च **(उँचाका)**

आरिँ अ आ ग ज ए अँ ओ उँ अँ अः म अँ सत जेन माना सेनो अछि, दूदा अँमे ज अँ ओ उँ अँ अः म केँ संशुद्धक कगमे गनत कगमे प्रशुद्ध आ उँचवित कयन जागत अछि । जेना म केँ वी कगमे उँचवित करवँ । आ देखियौ- अँ जेन देखिओ क प्रयोग अघटित । दूदा देखिअँ जेन देखियौ अघटित । कू सँ ह धवि अ समितित जेनासँ कू सँ ह रलैत अछि, दूदा उँचाका कान लनु हउ शिद्धक अस्तक उँचाकाक प्रवृत्ति रँठन अछि, दूदा हम जखन मलाजमे ज अस्तमे रँजेत छी, तखना थकाका लोककेँ रँजेत स्रणरहि- मलाज२, रासुरमे ओ अ हउ जू = ज रँजे छथि ।

हव जू अछि जू आ ए३ क संशुद्ध दूदा गनत उँचाका होगत अछि- गा । उहिना फ अछि कू आ य क संशुद्ध दूदा उँचाका होगत अछि छ । हव ने आ व क संशुद्ध अछि त्रै (जेना त्रैगिक) आ स आ व क संशुद्ध अछि स (जेना सिम) । त्र जेन त+व ।

उँचाकाक ऑडियो हागत विदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> गव उँगनछ अछि । हव केँ / सँ / पव पूरि अक्षरसँ सँठि कइ लिखु दूदा तँ / कइ लँठि कइ । अँमे सँ मे पहिल सँठि कइ लिखु आ रौदरना लँठि कइ । अकक रौद ठी लिखु सँठि कइ दूदा अगु ठीग ठी लिखु लँठि कइ जेना

लँठि दूदा सत ठी । हव उअ य सातम लिखु- छठम सातम ले । यवरीवमे रँवा दूदा यवरीवमे रावी प्रशुद्ध कक ।

बहए-

बह दूदा सकेँए (उँचाका सकेँ-ए) ।



ऋदा कथला कान बरुए आ बहे मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कन्ना जगहमे पाकिंग कबरौक अन्नास बहे ओकरा । थुनुनापव गता नागव जे दुनदुन नामा आ ड्रांगरव कनष्ट हसक पाकिंगमे काज करैत बरुए ।

डुनो, डुनए मे सेहो ए तबहक भेन । डुनए क उँचावण डुन-ए सेहो ।

संयोगल- (उँचावण संयोगल)

कौ/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे ले कर, गद्यमे क२ सके छी ।)

क (जेना वामक)

वामक आ संग (उँचावण वाम के / वाम क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचावण)

चन्द्रबिन्दु आ अन्नबाब- अन्नबाबमे कठ धरि प्रयोग होगत अछि ऋदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अछि- जेना वामसँ- (उँचावण वाम स२) वामकेँ- (उँचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

केँ जेना वामकेँ भेन हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेन हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक शेट् सरेहक प्रयोग अरुद्धित ।

के दोसर अर्थे प्रयाङ्ग भ२ सकेए- जेना, के कहनक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नधि, नहि, ले, नग, नँग, नर्ग, नर्ग ए सभक उँचावण आ लेखन - ले

ओह क रँदनामे ह्र जेना महर्णुर्ण (महओहर्णुर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जतए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संशुद्धाक्षरक प्रयोग उँचित । सम्पति- उँचावण स स ग त (सम्पति ले- काका सही उँचावण आसागीसँ सभुर ले) । ऋदा सरोतिस (सरोतिस ले) ।

वाह्दिय (वाह्दिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोडिमे/ पोडि लेन/ पोडि लेन



लौकिक/ लौकिक (अर्थ परिवर्तन) लौकिक/ लौकिक

उ लोकनि (हठी कर, उ मे रिंकावी ले)

उण/ उहि

उहिय/

उहि लव/ उखी वर

ऊपरौं बैसरो

पंचपर्या

देधियोक/ (देधिपुक ले- तहिना अ मे द्यत्र आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अघटित)

ऊकां / जेकां

तंग/ तौं

हएत / हएत

नधि/ नहि/ नंग/ नगौं ले

सौंसे/ सौंसे

रेंच /

रेंची (सोबाउव)

गाए (गांग नहि), रुदा गांगक दुब (गाएक दुब ले।)

बहरों पहिबते

हमखी/ अखी

सरें - सभ

सरेंहक - सभहक

धवि - तक

गग- रौत

रूमरें - समयरें

रूमखौं समयखौं रूमवहूँ - समयवहूँ

हमव अंवि - हम सभ

आकि- आ कि

सकेड/ कलेड (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)



होअन/ होनि

जाअन (जानि ले, जेना देन जाअन) क्रुदा **जानि-रूमि** (अर्थ परिवर्तन)

गअर/ जाअर

आड/ जाड/ आडु/ जाडु

मे, के, स, गव (मिद्धसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मिद्धसँ सँ क२) क्रुदा दूरी रा रैसी रिभक्ति संग
बहनागव पहिब रिभक्ति ठाकेँ सँडु । जेना **अमे सँ** ।

एकरी , दूरी (क्रुदा क२ री)

रिंकावीक प्रयोग मिद्धक अत्रुमे, रीचमे अनारथक कर्पे ले । आकावात्रु आ अत्रुमे अ क रौद रिंकावीक
प्रयोग ले (जेना **दिअ**

, आ/ दिअ , आ, आ ले)

अपेन्द्रप्रथनीक प्रयोग रिंकावीक रौदनामे कवरँ अत्रुचित आ मात्र हास्यक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)-
उना रिंकावीक संस्कृत क२ अत्रुग्रह कलन जागत अछि आ रतनी आ उँचावा दूरी ठाम एकव जाग बहेत
अछि/ बहि सकैत अछि (उँचावनामे जाग बहिने अछि) । क्रुदा अपेन्द्रप्रथनी सेहो अत्रुजेजीमे पनेमिर
केसमे जागत अछि आ ह्येचमे मिद्धमे जतए एकव प्रयोग जागत अछि जेना *raison d'etre*
एतए सेहो एकव उँचावना बेजेस डेठव जागत अछि, माल अपेन्द्रप्रथनी अत्रुकामे ले दैत अछि रवण
जाडेते अछि, से एकव प्रयोग रिंकावीक रौदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो अत्रुचित) ।

अगमे, एहिमे/ **अमे**

जअमे, जाहिमे

एअन/ **अअन/ अअन**

केँ (के बहि) मे (अत्रुग्रह बहि)

त२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाड तव

गाड वग

सॉस अल

जो (जो go, कले जो do)



ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगले

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

ए/थथ जेना- ए कावण/ एसँ/ थगले/ रुदा एकव एकटी थाम प्रयोग- नानति कतेक दिनसँ कहैत बहैत थग

ले/वथ जेना लेसँ/ नगले/ ले दुखारे

नहँ/ लो

गे/लो जेना गेसँ/ गेनहँ/ गेनहँ/ गेन

जथ जहि/ जे

जहिगाम/ जहिगाम/ जगथगाम/ जेथगाम

एहि/ थहि

थग (बोझक थतमे ब्राह्मण / ए

थगछ/ थछि/ थछ

तथ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओथ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर

बनेली/ बवहि

ते/ तँग/ तँ

जथर जथर

नग/ ले

छग/ छे

नहि/ ले/ नग

गग/ ले

तथि/ तथि ...

सथ मेरुंदक सग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेपव गत्यादि । थसगबमे छदथ
था रिभक्ति जूठल छदथ जना छदथसँ छदथमे गत्यादि ।



अर्ध/ जार्ध/

जे

जर्धिया/ जार्धिया/ अर्धिया/ जैर्धिया

एहि/ अहि/ अर्ध/ अ

अर्ध/ अर्ध/ अर्ध

तर्ध/ तर्ध/ ते/ तर्ध

उर्ध/ उर्ध

सार्ध/ सार्ध

जार्ध/ जार्ध/

जार्ध

जार्ध/ जार्ध/

जार्ध

ते/ तर्ध/ तर्ध

जार्ध/ जार्ध

नर्ध/ नर्ध

डर्ध/ डर्ध

नर्ध/ नर्ध/ नर्ध

गर्ध/

ते

डर्ध/ डर्ध

डर्ध/ अर्ध/ जार्ध/ जार्ध

२.२ मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्ध

नीटर्ध सुट्टेमे देन विकल्पमेसँ लैण्डर्ध एडिटर द्वावा कोष कर्ध डर्ध जैर्धक चाली:

लैण्ड कर्ध कर्ध जार्ध:

१. लैण्डर्ध/ लैण्डर्धर्ध/ लैण्डर्धर्ध/ लैण्डर्धर्ध, लैण्डर्धर्ध/ लैण्डर्धर्ध/ लैण्डर्धर्ध / लैण्डर्धर्ध

२. अर्ध/ अर्ध



२०

७. **संयोजक** ७/७२

२५. **शशि/शशि** शशि/शशि

२२.

जे जे/जे२ २३ श-शुक्ल श-शुक्ल

२४. **केवहि/केवहि** कयलहि

२३. **तखल/तखल** त

२६. **जा**

बल/बल बल/बल बल

२७. **निकल/निकल**

वागल/वागल बल/बल वागल/वागल निकल/बल वागल

२४. **ओत/ओत ओत/ओत ओत/ओत ओत**

२९.

की शुक्ल जे कि शुक्ल जे

३०. **जे जे/जे२**

३५. **कुदि / यदि**(मोष पावरी) कुदि/यादि/कुदि/यादि

यदि (मोष)

३२. **ओल/ओल**

३३.

हंस/हंस हंस

३४. **लो आकि दस/लो** किरा दस/ लो रा दस

३३. **सस-सस** सस-सस

३६. **डल/सात ड/डः/सात**

३७.

की की/की (दीदीकावसुमे २ बरित)

३४. **जरा/जरा**



३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दलान दिगि दलान दिगि/दवान दिय

४१

. लोवाह गयवाह/गयवाह

४२. किड थाव/ किड ठव/ किड थाव

४३. जाग डव/ जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा जेठ जागत डव जेठ जाग डव गहुँटा/ जेठ जागत डव

४५.

जराण (यरा)/ जराण(योरा)

४६. वय/ वय क/ कय/ वय कय / वय कय/ वय कय

४७. व/वय कय/

कय

४८. एथन / एथन / अथन / अथन

४९.

अथन अथन

५०. गरीव गरीव

५१.

धाव गाव कनधाव धाव गाव कनधाव/कनधाव

५२. जेकाँ जेकाँ/

जेकाँ

५३. तहिन तहिन

५४. एकव अकव

५५. रैहिन रैहिन

५६. रैहिन रैहिन

५७. रैहिन-रैहिन

रैहिन-रैहिन

५८. नहि/ लै



३९. कवरी / कवरौय/ कवरौय

३०. तँ/ त २ तय/तय

३१. तैयारी मे जेठ-भाय/तै, जेठ-भाय/जै

३२. गिजरीमे दू भाग/भाय/जै

३३. गी पौथी दू भाग/जै/ भाय/ जेव । गारत जारत

३४. गाय मे / गाय दूद गायक गयत

३५. देहि/ दगा दगि/ दगहि/ दगहि दहि/ दैहि

३६. द/ द२/ द

३७. उ (संयोजक) उ२ (संरनाय)

३८. तका कय तकय तक

३९. पौले (on foot) पले कयक/ कैक

४०.

तहुमे तहमे

४१.

पुनीक

४२.

रैजा कय कय / क२

४३. रैनाय/रैनाय

४४. रैवा

४५.

दिका दिका

४६.

ततहि

४७. गवरौवहि/ गवरौवनि/

गवरौवहि/ गवरौवनि

४८. रौव रौव

४९.



छह छह(अक्षर)

+०. जे जे'

+१

. सो के सोके'

+२. एखनका अखनका

+३. तुमिलव तुमिलव

+४. सुगव

/ सुगवका सुगव

+५. सठलक सठलक +६.

छवि

+१. कवगयो/उ कल्लेयो ल देवक /कल्लेयो-कवगयो

+२. प्रवादि

प्रवादि

+३. सगड १-सगडी

सगड १-सगडी

१०. गधरे-गधरे पेल-पेल

११. खेदखेदक

१२. खेदखेदक

१३. वगा

१४. लो- लो लोख

१५. रूमव रूमव

१६.

रूमव (सिरोधन अर्थमे)

१७. योह यधह / गधह/ सेह/ सधह

१८. तातिव

१९. अयलाय- अयलाग/ अयलाग/ एलाग

२०. निह- निह



१०१.

बिबु बिब

१०२. **बुब बुब**

१०३.

बुब (in different sense)-last word of sentence

१०४. **बुब नब अरि बुब**

१०५.

ल

१०६. **खेबाब (pl ay) खेबाब**

१०७. **शिकाबत- शिकायत**

१०८.

ठग- ठग

१०९

पठ- पठ

११०. **कनिअ/ कनिये कनिये**

१११. **बाकस- बाकसे**

११२. **लोक/ लोय लोक**

११३. **अडबन्त-**

उबन्त

११४. **बुंसेबहि (different meaning- got understand)**

११५. **बुंसेबहि/बुंसेबनि/ बुंसेबहि (understood himself)**

११६. **चमि- चम/ चमि लाम**

११७. **खथाब- खथाय**

११८.

मोष पाचबबिह/ मोष पाचबबिनि/ मोष पाचबबिह

११९. **कैक- कक- ककक**



१२०.

वग वग

१२१. **जबनाग**

१२२. **जबनाग** जबनाग- जबनाग/

जबनाग

१२३. **होगत**

१२४.

गबरोवहि/ गबरोवनि गबरोवहि/ गबरोवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखेत

१२६. **कबरोवै (willing to do) कबरोवै**

१२७. **जेकवा- जकवा**

१२८. **तेकवा- तेकवा**

१२९.

बिदेसब स्वागमे/ बिदेसबे स्वागमे

१३०. **कबरोवै/ कबरोवै/ कबरोवै/ कबरोवै**

१३१.

हारिक (उठाव लोकर)

१३२. **उज्ज रज्ज अफसोचा/ अफसोस कागत/ कागचा/ कागज**

१३३. **आषे भाग/ आषे-भाषे**

१३४. **पिटा / पिटाया/ पिटाए**

१३५. **नए/ ल**

१३६. **रैठा नए**

(ल) पिटा जय

१३७. **तख ल (नए) कहेत अछि। कहे/ सुने/ देखे/ उव/ कहेत-कहेत/ सुनेत-सुनेत/ देखेत-देखेत**

१३८.



कतक लोठे/ कतक लोठे

१३६. कयाँज-धयाँज/ कयाँज- धयाँज

१४०

. वग वग

१४१. खेवाँज (for playing)

१४२.

डयिह/ डयिह

१४३.

लोखत लोख

१४४. का कियो / कउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court -case)

१४७

. रैनसाँज/ रैनसाँज/ रैनसाँज

१४८. खरसाँज

१४९. ककरी कसी

१५०. चवटा चटा

१५१. कर्म कवग

१५२. डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै

१५३. एखनका/

खनका

१५४. वग/ विखग (साकक खतिग मेहँ)- वग

१५५. कखनक/

कवक

१५६. गवगी गगी



१३.१

बबदी बदी

१३.१. **बुना जेवाह** बुना/बुना२

१३.२. **जनाज-जनाज**

१३०.

जेना ल खेववहि जेना ल खेववनि

१३१. **नदी / ले**

१३२.

जेना जेना

१३३. **कतहु कते कही**

१३४. **उमरिगव-उमरिगव उमरिगव**

१३५. **जमिगव**

१३६. **जेना/जेनाज जेनाज**

१३७. **गग/गग**

१३८.

के के

१३९. **दबरेज/दबरेजा**

१४०. **गग**

१४१.

धवि डक

१४२.

धुवि लोष्ट

१४३. **बोबरक**

१४४. **बड**

१४५. **जे/जे**

१४६. **जेहि(गगमे जेहि)**

१४७. **जेहि / जेहि**



११५.

कवयौग्य कवयौग्ये

११६. एकैठी

११७. कवितथि / कवतथि

११८.

गुँचि / गुँच

११९. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

१२०.

वगवहि वगवनि वागवहि

१२१.

बुनि (उँचावा बुजा)

१२२. खचि (उँचावा खज)

१२३. एवथि लोवथि

१२४. रिंतोल/ रिंतोल/

रिंतोल

१२५. कवरौगवहि/ कवरौवनि

कवेवथिह/ कवेवथि

१२६. कवएवहि/ कवेवनि

१२७.

खाकि/ कि

१२८. गुँचि

गुँच

१२९. रौती जवाय/ जवाए जवा (आणि नगा)

१३०.

से से

१३१.



हॉ मे हॉ (हॉमे हॉ विचक्रित्तमे ल्हा कय)

१७३. ल्ख ल्खेन

१७७. फर्रव(spacious) ल्खेन

१७१. होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि

१७४. हाथ मट्टियाएरें/ हाथ मट्टियाएरें/ हाथ मट्टियाएरें

१७७. ल्का ल्का

२००. देखाए देखा

२०५. देखाए

२०२. सउरि सउर

२०३.

सालेरें सालेरें

२०४. गोलोह/ लोवहि/ लोवहि

२०३. लेखीक/ लेखीक

२०७. केजो/ केजो/ केजो/ केजो

२०१. किड न किड/

किड ल किड

२०४. घुमेनहूँ/ घुमेनहूँ/ घुमेनहूँ

२०७. एनाक/ एनाक

२५०. अः/ अह

२५५. नय/

नय (अर्थ-गविरुतन) २५२ कनीक/ कनीक

२५३. सरलक/ सउर

२५४. गिना२/ गिना

२५३. क२/ क

२५७. जा२/

जा

२५१. अ२/ अ



२५१. भ२ / भ' (" शक्यक कमीक आतक)

२५६. निथय/ नियग

२२०

.लेबईथवा/ लेबईयव

२२५. पहिब थकव ठा/ रीदका/ रीचक ठ

२२२. तहि/ तहि/ तथि/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँथ

तै / तथ

२२७. नँग/ नगँ नथि/ नहि/ नै

२२७. है/ हय / एवीहै/

२२७. छथि/ छै/ छैक / छग

२२४. दृष्टि/ दृष्टियै

२२६. थी (come)/ थीर (conjunct i on)

२३०.

थी (conjunct i on)/ थीर (come)

२३५. कला/ कोला, कोना/ केना

२३२. गोलैह-गवहि-गवनि

२३३. होरौक- होएरौक

२३४. केरौ- कएरौ- कएरौ/ केरौ

२३३. किड न किड- किड ल किड

२३७. केहेन- केहन

२३७. थीर (come)- थी (conjunct i on -and)/ थी । थीर- थीर / थीरह- थीरह

२३४. हयत- हत

२३६. घुमेनहू- घुमेनहू- घुमेवारे

२४०. एवक- एवक

२४५. होनि- होना/ होहि



२४२. उ-बाग उ अंगक रीट(conjunction), उ२ कहक (he said)/उ

२४३. की ह्य/ कोसी अथवा ह्य/ की हे । की हज

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टिये

२४५.

गोपिय/ गोपय

२४६. तेँ / टँ/ तयि/ तहि

२४७. जौ

/ जाँ जाँ

२४८. सभ/ सरँ

२४९. सभक/ सरँक

२५०. कहि/ कयि

२५१. कला/ कोला/ कोलहँ/

२५२. सबकती भ२ गोव/ भ३ गोव/ भ४ गोव

२५३. कोना/ केना/ कना/ कना

२५४. अः/ अह

२५५. जले/ जलए

२५६. गोवनि/

गोवाह (अर्थ परिवर्तन)

२५७. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२५८. नय/ कए/ कएह (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कर्षक/ कलक/ कर्ष-मर्ष

२६०. गठवहि गठवनि/ गठवजल/ गपठवहि/ गठवोवनि/

२६१. निअय/ नियम

२६२. हेबटअव/ हेबटयव

२६३. गहिव अरुव कहल ठा रीटमे कहल ठ

२६४. आकावाञ्जमे रिंकावीक प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातकीक प्रयोग श्लाकक तकनीकी न्यूनताक परिचायक
उकव रँदना अरुव (रिंकावी) क प्रयोग उचित



२७३. कव (गगमे खीह) / -क/ क२/ के

२७३. डैहि- डहि

२७५. वहीए/ वहीये

२७५. होएत/ हएत

२७६. जाएत/ जएत/

२७७. खीएत/ खीत/ खीउत

२७८

. खीत/ खीत/ खेत

२७९. लिखएरौक/ लिखरौक/ लिखेरौक

२७९. गुक/ गुकह

२७९. गुकले/ गुकए

२७९. खीतह/ खीउतह/ एतह/ एतह

२७९. जाहि/ जाग/ जग/ जे/

२७९. जागत/ जेतए/ जगतए

२७९. खीएव/ खीएव

२७९. केक/ कएक

२७९. खीगव/ खीगव/ खीगव

२७९. जग/ जगए/ जग (नामति जग वगनीह ।)

२७९. बुकएव/ बुकएव

२७९. कर्तुखीएव/ कर्तुखीएव

२७९. तहि/ ते/ तग

२७९. गीयरो/ गीयरो/ गीयरो

२७९. सके/ सकए/ सकय

२७९. सेवा/सवा/ सवए (भोत सवा गेव)

२७९. कहेत बली/देखेत बली/ कहेत डलो/ कहे डलो- खिना चलेत/ गडेत

(गडे-गडेत खरि कखला काव परिवर्तित) - खीव बुसो/ बुसोत (बुसो/ बुसो डी कदा बुसोत-बुसोत)/ सकेत/ सके । करेत/ करे । दे/ देत । डेक/ डे । बखरो/ बखरोक । बिग/



बिण । बातिक/ बाउक बुसे आ बुसेत केव अगन-अगन अगहन प्रयोग समीपन अछि । बुसेत-
बुसेत आबि बुसमिष । हमर बुसे छी ।

२५६. दुखीब/ द्वाब

२५७. भेई/ भेई/ भेई

२५८.

अब/ खीब/ खुना (जेव अब/ जेव खीब)

२५९. तक/ धवि

२६०. ग२/ लो (meaning different - जगरो ग२)

२६१. म२/ मँ (हुदा द२, न२)

२६२. उ२ (तीन अक्षरक मेन रँदना प्रणकत्रिक एक आ एकठा दोसबक उपयोग) आदिक रँदना ह
आदि । महउ२/ महउ२/ कर्ता/ कर्ता आदिये उ सहाउक कोना आरथकता मैथिलीमे ले अछि । बउ२

२६३. रँसी/ रँगी

२६४. रँना/ रँना रँना/ रना (बहेरँना)

२६५

२६६. रादी/ (रँदनेरादी)

२६७. राती/ राती

२६८. अउबहिदिय/ अउबहिदीय

२६९. लमप/ लरेप

२७०. लमउबका/ लमउबका

२७१. वाली/ वाली (

भेई/ भेई)

२७२. वागव/ वागव

२७३. हरी/ हरी

२७४. बाखक/ बाखक

२७५. आ (come)/ आ (and)

२७६. गशाताप/ गशाताप

२७७. २ केव बारहाव गेईक अउमे मात्र, यथासंभव रीटमे ले ।

२७८. कहत/ कह



३०.

बहू (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)

३१. तागति/ ताकति

३२. खवास/ खवारै

३३. लौगा/ लौगि/ लौगिनि

३४. जार्ति/ जार्थ

३५. कागज/ कागटा/ कागत

३६. गिरे (meaning different - swallow)/ गिरा (थस)

३७. बह्दिय/ बाह्द्रीय

DATE-LIST (year – 2012–13)

(१४२० हसदी साव (

Marriage Days:

Nov.2012 – 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012 – 5,9, 10, 13, 14

January 2013 – 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013 – 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013 – 21, 22, 24, 26, 29

May 2013 – 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013 – 2,3

July 2013 – 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013 – 16

February 2013 – 14, 15, 20, 21



April 2013– 22

May 2013– 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012– 25, 26, 28, 29

December 2012– 2, 3, 14

February 2013– 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013– 1

April 2013– 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013– 12, 13

Mundan Din:

November 2012– 26, 30

December 2012– 3

January 2013– 18, 24

February 2013– 1, 14, 15, 20, 28

April 2013– 17

May 2013– 13, 23, 29

June 2013– 13, 19, 26, 27, 28

July 2013– 10, 15

FESTIVALS OF MTHILA (2012–13)

Mauna Panchami –08 July

Madhusravani – 22 July

Nag Panchami – 24 July



Raksha Bandhan - 02 Aug

Krishnastami - 10 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 17 August

Vishwakarma Pooja - 17 September

Hartalika Teej - 18 September

Chauth Chandra - 19 September

Karma Dharma Ekadashi - 26 September

Indra Pooja Aarambh - 27 September

Anant Chaturdashi - 29 Sep

Agastya Ghadaan - 30 Sep

Pitri Paksha begins - 30 Sep

Jimootavahan Vrat / Jitima - 08 October

Matri Navami - 09 October

Somvati Amavasya Vrat - 15 October

Kalashstapan - 16 October

Belnauti - 20 October

Patrika Ravesha - 21 October

Mahastami - 22 October

Maha Navami - 23 October

Vijaya Dashami - 24 October

Kojagara - 29 Oct

Dhanteras - 11 November

Diya Bati, Shyama Pooja - 13 November



Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-14 November
Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a- 15 November
Chhat hi -19 November
Devot t han Ekadashi - 24 November
r avi vr at ar ambh- 25 November
Navanna par van- 25 November
Kar ti k Poor ni ma- Sama Vi sar j an- 28 November
Vi vaha Panchmi - 17 December
Makar a/ Teel a Sankr anti -14 Jan
Nar akni var an chat ur dashi - 08 Febr uar y
Basant Panchami / Sar aswati Pooj a- 15 Febr uar y
Achh a Sapt mi - 17 Febr uar y
Mahashi var at ri -10 Mar ch
Hol i kadahan-Fagua-26 Mar ch
Hol i - 28 Mar ch
Var uni Trayodashi -07 April
Chai ti navar atr ar ambh- 11 April
Jur i shi t al -15 April
Chai ti Chhat hi vr at a-16 April
Ram Navami - 19 April
Ravi Br at Ant - 12 May
Akshaya Triti ya-13 May
Janaki Navami - 19 May



Vat Savi tri -bar asai t - 08 June

Ganga Dashhar a-18 June

Somavat i Amavasya Vr at a- 08 July

Jagannat h Rat h Yat ra- 10 July

Har i Sayan Eka dashi - 19 July

Aashadhi Gur u Poor ni ma-22 Jul

VI DEHA ARCHI VE

पत्रिकाक सबठो पुरान अंक ब्रैल-रिदेह अ, तिवहूता आ देरनागरी कगमे Vi deha e j ournal 's
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह अंक ३० पत्रिकाक पहिल -

रिदेह अंक ३० आगाँक अंक ३० पत्रिकाक -

[ht t p://si tes.googl e.com/a/vi deha.com/vi deha/](http://sites.google.com/a/videha.com/videha/)

[ht t ps://si tes.googl e.com/a/vi deha.com/vi deha-ar chi ve-par t -i /](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/)

[ht t ps://si tes.googl e.com/a/vi deha.com/vi deha-ar chi ve-par t -ii /](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/)

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Mait hili Books Downl oad

[ht t p://si tes.googl e.com/a/vi deha.com/vi deha-pot hi](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi)

३.डियो संकलन आँ मैथिली. Mait hili Audi o Downl oads

[ht t p://si tes.googl e.com/a/vi deha.com/vi deha-audi o](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio)

४.मैथिली रीडियोक संकलन Mait hili Vi deos

[ht t p://si tes.googl e.com/a/vi deha.com/vi deha-vi deo](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos)

५.आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला.M t hila Pai nti ng/ M d ern Art and
Phot os

[ht t p://si tes.googl e.com/a/vi deha.com/vi deha-pai nt i ngs -phot os/](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/)

रिदेहक एहि सब सहयोगी विकार सेहो एक लेब जाई ।



७. बिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली ज्ञानरत्न एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अग्रजोमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९. बिदेहक पुरि-कप "जानसविक गाढ" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गडैअ :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिन तिवहता (मिथिलासक) ज्ञानरत्न (बैनांग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह: ब्रैन: मैथिली ब्रैनमे: पहिन रैव बिदेह द्वारा

<http://videha-brain.blogspot.com/>

१४. VI DEHA | ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archives.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिकक ज्ञ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिकक ज्ञ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिकक ज्ञ पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१८. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिकक ज्ञ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला



<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरत्न)

<http://maitthilaurmaitthila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाशन.

<http://www.shruti-publication.com/>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३.गजेन्द्र ठाकुर गडेक

<http://gajendrat hakur 123.blogspot.com>

२४. लषा कथा

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२३.बिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिल पोडकास्ट साँठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  Videha Radio

२१.  Join official Videha facebook group

२४. बिदेह मैथिली भाषा संसद

<http://maitthili-drama.blogspot.com/>

२६.समादिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maitthilifilms.blogspot.com/>

३१.अनछहार आखर

<http://anchinhar akhar kol kat a.blogspot.com/>



३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-hai ku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहनि कथा

<http://vihani katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिजा

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महत्वपूर्ण सूचना: The Maitthili pdf books are AVAILBLE FOR free PDF
DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४:३:७:१:+७९० "बिदेह"क छिठ संकषण: बिदेह-अ-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क छान बच्चा समिति ।

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(८) २००४-१३. सर्राधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । विदेह- प्रथम मैथिली पत्रिका आ-पत्रिका । ISSN 2229-547X VI DEHA **संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: मिर कमार साँ आ क्ल्याजरी (मलाज कमार कर्ण) । लेख-संपादन: नागेश्वर कमार साँ आ पञ्जीकर विद्यालाल साँ । कवि-संपादन: ज्योति साँ चौधरी आ बग्गि लेखी मिश्र । संपादक-लेख-अनुवाद: डा. जया रम्याँ आ डा. बंजीर कमार रम्याँ । संपादक- ग्राहक-वैगम-चेवटि-लेख ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडल आ हिरासाँ साँ । संपादक- अनुवाद विभाग- विनोद उमेश ।**

बचनाकारक अपन मौलिक आ अग्रकाशित बचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उतबदासिह लेखक गणक मध्य छहि) ggajendra@videha.com केँ मेन अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf आ .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकारक अपन सकिष्ठ परिचय आ अपन कल कएन गेन फोटो पठातह, से आशिा करैत छी । बचनाक अंतमें ठाँगग बहय, जे आ बचना मौलिक अछि, आ पहिन प्रकाशिक हेतु विदेह (पत्रिका) आ पत्रिकालेँ देन जा बहन अछि । मेन प्राप्ति होयराक बाद यथार्थतः शीघ्र (सात दिनक अंतमें) एकब प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । 'विदेह' प्रथम मैथिली पत्रिका अछि आ एमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें मिथिला आ मैथिलीसँ संरचित बचना प्रकाशित कएन जायत अछि । एहि आ पत्रिकालेँ शीघ्रतः नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिलेँ आ प्रकाशित कएन जायत अछि ।

(८) 2004-13 सर्राधिकार स्वकृत । विदेहमें प्रकाशित सभ्ठा बचना आ आर्काइवरक सर्राधिकार बचनाकारक आ संप्रहकर्तक नगमें छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिक किरा आर्काइवरक उपयोगक अघिकार किराक हेतु ggajendra@videha.com पब संपर्क कक । एहि सांगठिकेँ शीघ्रतः नक्का ठाकुर, मधुनिका चौधरी आ बग्गि शिवाँ द्वारा डिजाइन कएन गेन ।



सिंह बडु

